ओ३म्

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
हिन्दी मासिक मुख पत्र
माह-फाल्गुन-चैत्र, संवत्-2076-77
मार्च 2020

अंक 173, मूल्य 10

अग्निदूत

अग्निं दूतं वृणीमहे. (ऋग्वेद)

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से
चैत्र शुक्ल प्रतिपदा नवसम्वत्सर व आर्यसमाज स्थापना दिवस की समस्त प्रदेशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएँ एवं बधाईयाँ

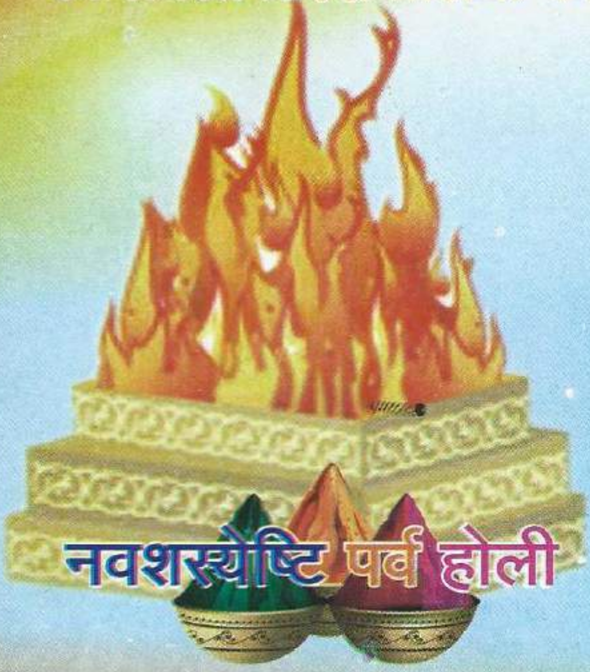

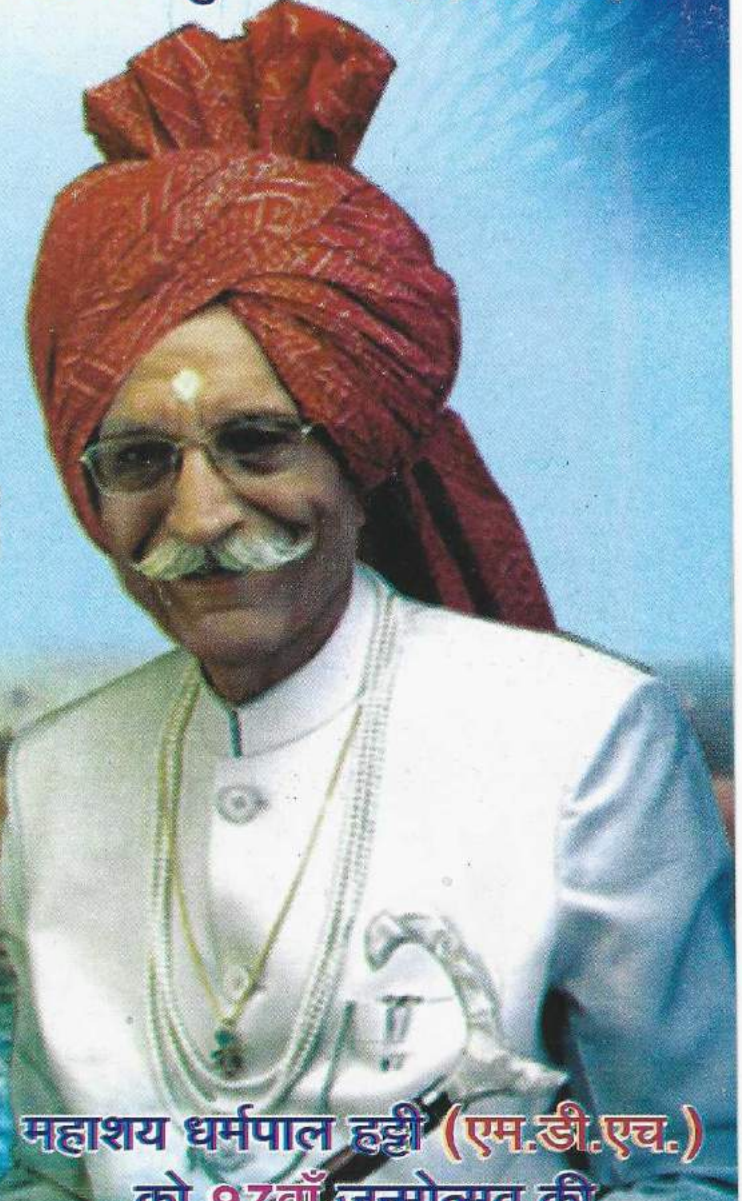

विनम्र श्रद्धाञ्जलि
आर्यसमाज के हनुमान
आचार्य ब्रह्मचारी नन्दकिशोर जी

महाशय धर्मपाल हट्टी (एम.डी.एच.)
को 97वाँ जन्मोत्सव की
हार्दिक शुभकामनाएँ एवं बधाईयाँ

दिनांक 7 मार्च 2020 दिन बुधवार को सभा कार्यालय दुर्ग में सम्पन्न
वासन्ती नवसस्येष्टि यज्ञ एवं होली मिलन समारोह की झलकियाँ

अग्निदूत

हिन्दी मासिक

राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक विचारों की मासिक पत्रिका

विक्रमी संवत् – २०७६–७७
सृष्टि संवत् – १,९६,०८,५३,१२०–१२१
दयानन्दाब्द – १९७–१९८

: प्रधान सम्पादक :
आचार्य अंशुदेव आर्य
प्रधान सभा
(मो. ०७०४९२४४२२४)

★

: प्रबंध सम्पादक :
आर्य दीनानाथ वर्मा
मंत्री सभा
(मो. ९८२६३६३५७८)

★

: सहप्रबंध सम्पादक :
श्री चतुर्भुज कुमार आर्य
कोषाध्यक्ष सभा
(मो. 6260908636)

★

: सम्पादक :
आचार्य कर्मवीर
मो. ८९०३१६८४२४

पेज सज्जक :
श्रीनारायण कौशिक

– कार्यालय पता –
छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द परिसर, आर्य नगर, दुर्ग (छ.ग.) ४९१ ००१
फोन : (०७८८) ४०३०९७२
फैक्स नं. : ०७८८-४०११३४२ ;
e-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com

वार्षिक शुल्क-१००/- दसवर्षीय-८००/-

वर्ष – १५, अंक ८ ओ३म् माह/सन् –मार्च २०२०

श्रुतिप्रणीत–सिद्धधर्मवह्निरूपतत्त्वकं,
महर्षिचित्त–दीप्त वेद–सारभूतनिश्चयं ।
तदग्निसंज्ञकस्य कौत्यमेत्य सभासञ्ज्ञकम् ,
सभाग्निदूत–पत्रिकेयमादधातु मानसे ।।

विषय – सूची

			पृष्ठ क्र.
१.	प्रभु वर्षा की रिमझिम	स्व. रामनाथ वेदालंकार	०४
२.	वसन्तोत्सव बनाम नवशस्येष्टि	आचार्य कर्मवीर	०५
३.	सी.ए.ए. व एन.पी.आर. आज की आवश्यकता	डॉ. बिजेन्द्रपाल सिंह	०८
४.	समाजसेवा के जरिए करें आर्यसमाज का प्रचार–प्रसार	श्री अर्जुनदेव चड्ढा	१०
५.	मैं महर्षि दयानन्द सरस्वती का ऋणी हूँ	भारतेन्दु सूद	१३
६.	बात सिर्फ शराब की नहीं	डॉ. वेदप्रताप वैदिक	१५
७.	सत्यार्थ प्रकाश सद्धर्म का प्रकाशक ग्रंथ	मनमोहन कुमार आर्य	१७
८.	हर्ष एवं उल्लास का पर्व : होली	कृष्णचंद टवाणी	२२
९.	वह भी सच्चा देशभक्त होता है .	खुशहालचन्द्र आर्य	२४
१०.	रक्तसाक्षी पं. लेखराम	मनुदेव अभय विद्यावाचस्पति	२६
११.	आर्यसमाज क्या ?क्यों ?कैसे ?	रोहित आर्य	२९
१२.	कविता : बलिदानी शौर्य को नमन	गजेन्द्र सिंह सोलंका	३०
१३	कविता : नवसम्वत् हो मंगलकारी	स्व. राधेश्याम आर्य	३०
१२.	होमियोपैथी से स्वाइन फ्लू का उपचार	डॉ. विद्याकांत त्रिवेदी	३१
१३.	समाचार प्रवाह		३३

सूचना : छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का अणुसंकेत
(ई-मेल) E-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com
(सम्पादक) E-mail : shastrikv1975@gmail.com

सूचना : हमारा नया वेब साइट देखें
Website : http:/www.cgaryapratinidhisabha.com

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है ।

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक – आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग के वैदिक मुद्रणालय से छपवाकर प्रकाशित किया गया ।

प्रभु वर्षा की रिमझिम

वेद वेदामृत

भाष्यकार - स्व. डॉ० रामनाथ वेदालङ्कार

शृण्वे वृष्टेरिव स्वनः पवमानस्य शुष्मिणः ।
चरन्ति विद्युतो दिवि ॥ ऋग्. ९.४१.३

ऋषिः मेधातिथिः काण्वः । देवता पवमानः सोमः । छन्दः गायत्री ।

● (शृण्वे) सुन रहा हूँ, (शुष्मिणः) बलवान् (पवमानस्य) पवित्रता-दायक सोम प्रभु का (वृष्टेः स्वनः इव) वर्षा की रिमझिम जैसा (स्वनः) नाद (हो रहा) है ।(दिवि) हृदयाकाश में (विद्युतः) बिजलियाँ (चरन्ति) चल रही है, चमक रही है ।

आज मेरे आत्म-लोक में बरसात छाई है । सोम प्रभु मेघ बनकर बरस रहे हैं । साधारण मेघ भी 'पवमान' होता है, क्योंकि वह पवित्रता-दायक निर्मल जल की वर्षा करता है, फिर मेरे सोम प्रभु 'पवमान' क्यों न हों । उनमें तो वह पवित्रता-दायक आनन्द-रस भरा है, जो आत्मा और मन के युग-युग से संचित पाप को धो देता है । सोम प्रभु 'शुष्मी' है, बलवान् हैं, बलियों के बली है । अतः अपनी शरण में आने वाले को आत्मिक बल से परिपूर्ण कर देते हैं । उनसे बरसनेवाली बल की वृष्टि निर्बल को बली, असहाय को सुसहाय और उत्साह एवं जागृति से हीन को उत्साही एवं जागरुक बना देती है। आज मैं स्पष्ट रुप से अनुभव कर रहा हूँ कि शुष्मी पवमान सोम प्रभु की आनन्दमयी रिमझिम वर्षा मेरे अन्तलोक में हो रही है । वर्षा की रिमझिम में जो संगीत होता है, वैसा ही संगीत मेरी आत्मा में उठ रहा है । उस दिव्य संगीत में मैं अपनी सुधबुध ख़ो बैठा हूँ । बल और आनन्द की रिमझिम के साथ-साथ शीतल, मन्द, सुगन्ध प्राण-पवन बहकर मेरे मानस में नवीनता और स्फूर्ति उत्पन्न कर रहा है । वर्षा होने पर जैसे भूलोक पर सर्वत्र हरियाली छा जाती है, ऐसे ही मेरा अन्तलोक भी सत्य, न्याय, दया, श्रद्धा आदि सद्गुणों की हरियाली से हरा-भरा हो गया है । बरसात में जैसे नदियाँ पर्वतों से नीचे मैदानों में बहने लगती है, ऐसे ही मेरे आत्मा के उच्च शिखरों पर बरसे हुए सोम प्रभु के दिव्य रस की नदियाँ नीचे अवतरण कर मेरे मन, बुद्धि, प्राण, इन्द्रियों आदि को आप्लावित कर रही है । बरसाती आकाश में जैसे बिजलियाँ चमकती है, वैसे ही मेरे हृदयाकाश में आज दिव्यता की विद्युतें चमकार कर रही है । ये विद्युतें मेरे मानस प्रकाश का सूत्र पकड़ा रही है । उन क्षण प्रभा विद्युतों से मैं अपने स्थायी विद्युद्-धारा को अर्जित कर रहा हूँ, जो जीवन पर्यन्त मुझे ज्योति देती रहेगी । मैं मुग्ध हूँ, प्रभु वर्षा की रिमझिम पर, मैं मुग्ध हूँ, दिव्य विद्युतों की द्युति पर । हे सोम प्रभु ! ऐसी कृपा करो कि यह बरसात मेरे आत्मलोक में सदा उमड़ती रहे, सदा मुझे दिव्य बलदायी रस और प्रकाश प्रदान करती रहे ।

संस्कृतार्थ :- १. शुष्म बल (निघं २.९) । शुष्मम् इति बलनाम, शोषयतीति सतः ।

सम्पादकीय

कभी नीर न गिरे नयन से, अधरों में उल्लास हो ।
तन-मन पुलकित हों सभी के, जीवन में मधुमास हो ।।

वसन्तोत्सव बनाम नवशस्येष्टि

अग्निदूत के सहृदय पाठकों !

आप सभी को वासन्ती नवशस्येष्टि की अनन्त शुभकामनाएँ ।

यह भारत वर्ष सदा से पर्वप्रिय देश रहा है यहां वर्षभर एक के बाद एक पर्व मनाये जाते हैं। जो भारतीय जनमानस में मिलजुल कर रहने की भावना को उद्दीप्त करते हैं। वस्तुत: ये पर्व उत्साह से अपने कर्त्तव्य में जुटे रहने की प्रेरणा के साथ-साथ लोगों के जीवन स्तर को प्रोन्नत बनाने में अहम् भूमिका निभाते है। पाणिनीय व्याकरण के आधार पर **पृ पालनपूरणयो:** धातु से पर्व शब्द निष्पन्न होता है जिसका अभिप्राय है **जनान् आनन्देन पूरयतीति पर्व** अर्थात् जनमानस में जो प्रसन्नता व हर्ष का संचार कर दे उसका नाम पर्व है। उड़ीसा में कहावत है, **बार मास रे तेर टी** पर्व अर्थात् विश्व में केवल अपना भारतवर्ष ही ऐसा देश है जहां पर बारह महिने में तेरह पर्व मनाये जाते है यह इस देश की एक अन्यतम खासियत है उपर्युक्त कहावत के आधार पर उड़ीसा में जिन तेरह पर्वों की गणना की जाती है यद्यपि देश में सर्वत्र उन्हीं नामों एवं रूपों में वे पर्व नही मनाये जाते पुनरपि किसी न किसी रूप में अपनी भावनाओं का इजहार तो पर्वो के जरिये करते ही है इस अंतिम सत्य को कौन नकार सकता है ?

देश में मनाये जाने वाले अनगिनत पर्वों में से चार पर्व ऐसे है जो पृथक्-पृथक् अपना अपना विशिष्ट महत्व रखते हैं वे है **श्रावणी उपाकर्म, विजयादशमी, दीपावली, और होली**। एक प्रचलित मान्यता के अनुसार श्रावणी पर्व ब्राह्मणो का पर्व माना जाता है विजयादशमी को क्षत्रियों का पर्व मानते हैं।दीपावली वैश्यों की मानी जाती है और होली को शूद्रों का पर्व कहा जाता है उपयोगिता को लक्ष्य कर यदि इन बातों का विश्लेषण करें तो स्थिति यह है - मान लिया ब्राह्मणों के लिये श्रावणी उपाकर्म है क्योंकि स्वाध्याय का चातुर्मास्य इसी पर्व से आरंभ होता है। वनों में रहने वाले वानप्रस्थ मुनिगण वर्षा ऋतु की वजह से ग्रामों में आ जाते थे और वेद कथा प्रवचन आदि के द्वारा वर्षाकाल व्यतीत करते थे इस दिन यज्ञोपवीत परिवर्तन करने की प्रथा भी पुराने काल से चली आ रही है इस दृष्टि से यदि इस पर्व के ऊपर ब्राह्मणों की

मुहर लगाई जाये तब तो ठीक है। विजयादशमी का औचित्य क्षत्रियों के संबंध में यदि इस आधार पर माना जाय कि विजयादशमी से पूर्व चौमासा होता था, वर्षाकाल में आबालवृद्धवनिता सब बड़ी श्रद्धा से महात्माओं के अमृत वचन सुनते थे और वर्षा की समाप्ति पर इस विजयादशमी का आयोजन होता था, जिसमें क्षत्रियगण अस्त्र-शस्त्रों को ठीक करते थे जिनमें जंग लग गया होता था फिर अपने बंधुवान्धवों से अंतिम भेंट करके विजय यात्रा में निकल जाते थे। दीपावली में आमतौर पर देश में लक्ष्मी पूजा का प्रचलन है। लक्ष्मी की प्राप्ति के नये सिरे से योजनायें बनाई जाये, लाभ-हानि को लक्ष्य कर जिनमें लाभ हो उन्हीं व्यापारों का ही अनुष्ठान हों इस प्रकार इस संबंध में कुछ हद तक ये बातें ठीक मानी जा सकती है, परंतु जहां तक होली की बात है कि शूद्रों का है, पर मानते सभी हैं, यह बात अनुचित है होली दीपावली के संबंध में यह जो उपर्युक्त मान्यता का दिग्दर्शन मैने कराया है इसमें कोई सन्देह नहीं है कि यह जबरदस्ती तुक भिड़ाने की अनर्थक कोशिश मात्र है। वस्तु स्थिति के साथ वास्तव में इन बातों का दूर का भी संबंध नहीं है। निष्कर्षत: वास्तविकता तो यह है कि इस देश में दो प्रकार की फसलें होती है : रबी और खरीफ। ये दोनों फसलें क्रमश: जब कट करके आती थी तो दीपावली एवं होली के पर्व मनाये जाते थे। इन पर्वों को प्राचीन शास्त्रों के अनुसार नवशस्येष्टि के रूप में यहां मनाते थे।

नवशस्येष्टि का अर्थ नये अन्न से यज्ञ होता है। आइये इस नवशस्येष्टि बनाम होलिकोत्सव अथवा बसंतोत्सव पर पुराकालीन साक्ष्यों के आधार पर जरा चितंन करें हमारे हिन्दू त्यौहार प्रकृति और मौसम के बदलने के साथ-साथ आते जाते रहते हैं। इस प्रकार होली का पर्व भी वसंत ऋतु के साथ ही आता है। वसंत ऋतु को ऋतुराज अर्थात ऋतुओं का राजा भी कहा जाता है। ऋतुराज वसंत का अविर्भाव हो चुका है वसंत ऋतु के साथ साथ प्रकृति की छटा में भी परिवर्तन आ गया है। उसका रूप दिन प्रतिदिन रम्य से रम्यतर होता जा रहा है।आज वसंत भी अपने पूर्ण यौवन पर है। वनोपवन में शहर और गांवों में सर्वत्र नयनाभिराम विकास मन को मोद से भर रहा है।चराचर जगत् ने भी इसी आनन्द से प्रफुल्लित होकर नवीन बाना बदल लिया है। उद्यानों में नवविकसित कुसुमों की बहार है। और खेतों में परिपक्व यव और गोधूम के शस्यो की सुनहरी सरिता तरंगित हो रही है। पशुओं ने नवीन रोमावली के चित्र -विचित्र अभिनव परिधान धारण किये हैं। पक्षियों की चारू चहचहाहट से सुन्दर सरसता का संचार हो गया है। कलकण्ठा कोकिला की कूक मयूर की केका, तरूण तीतर का तारस्वर तथा कपोत का कलरव या कबुतरों की गुटरगूं, वायुमंडल को मधुरिमासे परिपूर्ण कर रहा है। मलयाद्रि को धीर सुगंध समीर अठखेलियां करता हुआ चला रहा है।

ऐसे उदार और मनोहर सुसमय में आषाढ़ी शस्य के शुभागमन की शुभाशा जनता और किसानों के मन में मोद, मौज मस्ती और उल्लास भर देती है इस मास की फसल भारत की सब फसलों में सर्वश्रेष्ठ और सिरमौर गिनी जाती है। ऐसे जीवनाधार सर्वपालक शस्य फसल के आगमन पर कृषकों का मन बल्लियों की तरह उछलने लगता है। ऐसे सुखद अवसर पर आनन्दोत्सव और रंगरेलियां मनाना स्वाभाविक ही है। यह केवल भारत की ही विशेषता नहीं किन्तु सूरीनाम में भी नव शस्य के प्रवेश का उत्सव मनाया जाता है किन्तु

यह भारतीय होली का उत्सव केवल आमोद-प्रमोद का ही साधन नहीं है धर्मपरायणता का भी है क्योंकि आर्य वंशजों की प्रत्येक बात में धार्मिकता और वैज्ञानिकता जुड़ी हुई है। शीतकालीन वर्षा के अनन्तर आवासों की परिष्कृति के लिये तथा बसंत की नई ऋतु बदलने पर अस्वास्थ्य के प्रतिरोध के लिये हवन से वातावरण को शुद्ध करने का अभिप्राय भी है। गीता में कहा -

यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्विषै :। भुञ्जते ते त्वघं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात् ॥

अर्थात् नई फसल से सर्वप्रथम यज्ञ किये बिना ही जो व्यक्ति उस अन्न का सेवन कर बैठते है वे केवल पाप ही खाते हैं और इसके विपरीत जो यज्ञ भगवान को हवि प्रदान करने के उपरान्त अन्न का सेवन करते हैं वे सब प्रकार के पापों से छूट जाते है। गीता के अन्दर एक अन्य स्थान में कहा गया है कि **तैर्दत्तान्प्रदायैभ्यो यो भुङ्क्ते स्तेन एव सः** अर्थात् देवों द्वारा दी गयी वस्तुओं को यज्ञ के माध्यम से उन्हें न लौटाकर सीधे सेवन आरंभ करने वाले चोर होते हैं उपर्युक्त तमाम बातों से यह जानकारी मिलती है कि यहां नवशस्येष्टि के रूप में दीपावली होली में यज्ञों की पवित्र परम्परा रही है आज भी कुछ प्रान्तों में होली के अवसर पर पहले पके चने आदि अग्नि में चढ़ाते है और अर्धपक्व यानी होलक होने पर उसका सेवन करते हैं, प्राचीन यज्ञों का यह अपभ्रंश रूप ही है। आज आवश्यकता है अपनी संस्कृति के अनुरूप पर्वों के पालन करने की।

उपर्युक्त बातों के अतिरिक्त भी आज इन पर्वों में अनेंक विकृतियों और फूहड़पन का प्रवेश हो गया है जैसे दीपावली में जुआ खेलना जबकि वेद में **अक्षैर्मा दीव्य** कहकर इसे घोर निन्दनीय कृत्य बताया गया है। इसके दुष्परिणामों का इतना विस्तृत चित्रण वेद के अंदर प्राप्त होता है, जिसे पढ़कर अनायास इस महान् अनर्थ आचरण के फल का सहज ही परिचय प्राप्त हो जाता है। नवशस्येष्टि के रूप में दीपावली के अवसर पर परम पावन यज्ञ के स्थान पर पटाखे आदि छोड़कर वायुमंडल को दूषित करना एवं होली के पवित्र अवसर पर भद्दी गालियां देना उटपटांग केमिकल युक्त रंग छिड़कना आदि पर्व की महत्ता पर तुषारपात करते हैं इन पर्वों की पवित्रता को बचाये रखने कें लिये हम सबका नैतिक कर्त्तव्य बनता है कि हमें अपनी **सा प्रथमा संस्कृति विश्ववारा** की सुरक्षा हेतु इन पर्वों के माध्यम से केवल उन्हीं रीतियों एवं नीतियों का अनुसरण करना चाहिये जिससे अपनी प्राचीन सभ्यता की गौरवमयी झलक प्राप्त हो सके। होली प्रेम प्रसार का पर्व है। गिले शिकवे भूलाकर फिर से गले मिलने का त्यौहार है। जो हो ली सो हो ली अब आगे से गलती नहीं होगी की प्रतीक्षा करने का दिन है होलकोत्सव। आपस में भेदभाव भूलकर एक परमात्मा की अमृत सन्तान मानकर आत्मवत् सर्वभूतेषु का संकल्प दुहराने का उत्सव है यह। आईये इन प्राचीन पर्वों की गुणवत्ता को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिये हम सभी अपनी योग्यता, क्षमता व सामर्थ्य के अनुसार बद्धसंकल्प होकर समृद्ध समाज की संरचना में सहभागी बनें।

एतद्देशप्रसूतस्य, सकाशादग्रजन्मनः। स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन्, पृथिव्यां सर्वमानवाः ॥

– आचार्य कर्मवीर

ज्वलन्त समस्या

सी. ए. ए. व एन.पी. आर. आज की आवश्यकता

- डॉ. बिजेन्द्रपाल सिंह

सिटीजन शिप अमेन्डमेन्ट बिल (सी.ए.बी.) को लेकर देश में अभी हंगामा हुआ, आगजनी हुई। राष्ट्रीय सम्पत्ति को क्षति पहुंचायी गयी। एक सम्प्रदाय विशेष को भ्रमित कर भड़काया गया। इस अधिनियम से जो यहां के नागरिक हैं, उन्हें तो कोई परेशानी ही नहीं है, मुस्लिमों को कहा गया कि तुम्हें देश से निकाला जाएगा यह गलत धारणा पैदा की गयी। हालांकि नागरिकता संशोधन अधिनियम २०१९ भारत के हित में है। जो घुसपैठिये बांग्लादेश व रोहिंग्या यहां अवैध रुप से चोरी छिपके आए उनके लिए हैं। वह लाखों की संख्या में यहां अवैध रुप से रह रहे हैं। सोचने की बात है कि किसी के घर में बाहर का व्यक्ति चुपचाप, चोरी से, धोखे से आकर छिपकर या सीनाजोरी से कैसे रह सकता है।

नागरिकता संशोधन कानून २०१९ विदेशों में रह रहे उन अल्पसंख्यकों के हितार्थ है, जिन्हें वर्षों से प्रताड़ित किया जा रहा है, पाकिस्तान, बांग्लादेश, अफगानिस्तान आदि देशों में हिन्दू, जैन, पारसी, ईसाई, बौद्ध आदि अल्पसंख्यक हैं, जिनकी संख्या २०१७ में १८% थी आज २% से भी नीचे पहुंच गयी है। वहां उन्हें जबरन धर्मान्तरित किया जा रहा है, उनकी बेटियों से बलपूर्वक निकाह कर लिया जाता है, उनको बुरी तरह से सताया जाता है, प्रताड़ना से अल्पसंख्यक दम तोड़ देते हैं। ऐसे में वहां उनका कौन साथ दता है, उनके लिए भारत आना ही एक मात्र रास्ता रह जाता है। अतः ऐसे व्यक्तियों को भारत की नागरिकता मिलनी चाहिए।

भारत का १९४७ में विभाजन हुआ, पूर्वी तथा पश्चिमी पाकिस्तान बने, उससे पूर्व वह लोंग भारत के ही नागरिक थे। पाकिस्तान में अल्पसंख्यकों की सुरक्षा व बचाव के लिए महात्मा गांधी जी ने कहा था - जिन लोगों को पाकिस्तान से भगाया गया था, उन्हें पता होना चाहिए कि वे पूरे भारत के नागरिक थे। उन्हें यह महसूस करना चाहिए के वे भारत की सेवा करने और उनकी महिमा से जुड़ने के लिए पैदा हुए थे। (१२ जुलाई १९४७ प्रार्थना सभा)

भारत के नागरिक जो पहले भी नागरिक थे आज भी नागरिक हैं भारत के हैं। बटवारे के समय लाशों से भरकर रेल से भारत भेजा था, जो वहां रह गए उन्हें बलात्कार पूर्वक, अपहरण कर, अल्पसंख्यकों की महिलाओं पुरुषों का धर्म बदल कर, उनकी संख्या नगण्य कर दी गयी। मानवता के नाते उन्हें भारत आने का रास्ता साफ होना चाहिए। पाकिस्तान में अल्पसंख्यकों पर कहर ढाया जाता है, जुल्म होते हैं, ऐसे में भारत आना ही विकल्प है।

माननीय राष्ट्रपति महोदय जी ने १२ दिसम्बर २०१९ को नागरिकता (संशोधन) विधेयक को मंजूरी दे दी। इस कानून की मांग पहले से ही हो रही थी, पट्टामि सीता रमैया, जे.बी. कृपलानी, जवाहरलाल नेहरु, अबुल कलाम आजाद, श्यामप्रसाद मुखर्जी, राममनोहर लोहिया, आई. के गुजराल तथा इन्दिरा गांधी जैसे भारत के नेता, कर्णधार इस तरह की आवाज उठाते रहे हैं। यह नियम भारत व भारत की जनता के पूर्ण हित में है। सरकार का यह कार्य मानवता के नाते से, सुरक्षा के नाते से, बचाव के नाते से आवश्यक था। भारत की जनता जो बुद्धिजीवी वर्ग है, उन्होंने इस विधेयक का पूर्ण समर्थन किया है। मात्र जो विपक्षी दल हैं, कुछ सत्ता हेतु षड़यंत्र कर जनता को गुमराह कर अपना स्वार्थ पूरा करना चाहते थे। भारत की जनता के हित के लिए यह विधेयक आज की आवश्यकता थी।

ऐसे समय में हमारा दायित्व बनता है कि हम किसी के भड़काने में न आएं। धैर्य पूर्वक चिन्तन व मनन करना चाहिए, किसी ने भड़काया और हम आगजनी, पथराव, तोड़-फोड़ पर आ गए। यह राष्ट्रीय सम्पत्ति व सार्वजनिक सम्पत्ति का नुकसान हो रहा है। यह सम्पत्ति जिसे क्षति

पहुंचायी जाती है, किसकी है। यह हम सब भारतवासियों की ही तो है, हम देश प्रेम के गीत गाते हैं, क्या इसीलिए गाते हैं कि आगजनी करें, पथराव करें, यह किसी का नहीं अपने देश का ही नुकसान है। सोचें क्या कोई अपने घर में आग लगा सकता है कभी नहीं। देश को भी अपना घर समझें। कभी जामिया, कभी जे.एन.यू., कभी कहीं सड़कों पर देश विरोधी नारे लगाए जाते हैं, इन सबके पीछे देश विरोधी व्यक्ति होते हैं, हम हिन्दू, मुस्लिम सभी नागरिकों को अराजकता फैलानें वाले तत्वों के भड़काने में नहीं आना चाहिए, राष्ट्रपित में जो भी कार्य होते हैं, सम्मानपूर्वक करना चाहिए।

आज जनता की जागरुकता की आवश्यकता है, जिससे राष्ट्र की उन्नति हो, समाज की उन्नति हो, भौतिक व आत्मिक उन्नति हो वही जागरुकता है और जहां राष्ट्र समाज तथा जनता की हानि हो वह उचित नहीं, यदि हमें देश से प्रेम है तो सम्पत्ति को क्षति नहीं पहुंचानी चाहिए। देश का संगठन सुदृढ़ करने का प्रयत्न करते रहना चाहिए, परन्तु दुःख की बात है कि आज भी चन्द जयचन्द भारत में षड़यन्त्रों में लिप्त है, जिन्हें भारत की खुशहाली, भारत का विकास रास नहीं आ रहा, तोड़-फोड़, आगजनी, पथराव का ही अवसर ढूंढते रहते हैं। ऐसों से सावधान रहने की आवश्यकता है। पाकिस्तान अल्पसंख्यकों को लगातार प्रताड़ित कर इस्लाम धर्म (जबरन) ग्रहण करने को दबाव बना रहा है। दानिश कलेरिया (क्रिकेट खिलाड़ी) जो हिन्दू है, उस पर धर्म परिवर्तन का दबाव डाला गया, शोएब अख्तर ने भी ऐसा खुलासा किया है। इतने बड़े खिलाड़ी के साथ जब ऐसा हो रहा है, तो सामान्य हिन्दू के साथ क्या होगा। आइए ! सी.ए.ए. व एन.पी.आर. के कार्य को बढ़ायें।

पता – चन्द्रलोक कालोनी, खुर्जा

जली होलिका

बनारसी लाल

जली होलिका आज, सभी को दंभ जलाने होंगे।
सुप्त भाव जो ढके राख से पुनः जगाने होंगे॥
तृष्णा और छल छद्‌म् जलाओ यही आज आह्वान।
स्वार्थ भाव जल जाए इसी में यही पर्व सम्मान॥
प्रेम भाव बरसाना होगा पुनः जगाकर प्रीत।
आज गुंजाना होगा जग में अमर प्रेम संगीत॥
शुष्क हृदय में प्रेम भाव के पुष्प खिलाने होंगे।
जली होलिका आज सभी को दंभ जलाने होंगे।
आज स्नेह का रंग घोलकर प्रेम भरी पिचकारी॥
हम सभी को रंगना होगा कर पूरी तैयारी।
राग द्वेष को त्याग सब द्वन्द भगाने होंगे।
जली होलिका आज सभी को दंभ जलाने होंगे।

सदाचार अपनाओ

बाधाओं से मत घबराओ
आगे बढ़ो, बढ़ते ही जाओ,
सदाचार को अपना कर
तुम सबके प्रिय बन जाओ।

कभी न लाओ झूठ हृदय में
कभी न मेहनत से मुंह मोड़ो
भेद–भाव के बंधन तोड़कर
सबसे अपना नाता जोड़ो।

श्रद्धा, सेवा से मन हर लो
जीवन में खुशियाँ भर लो
बनकर नम्र दया के सागर
अपना नाम उजागर कर लो।

- राजकुमार जैन 'राजन',
चित्रा प्रकाशन, आकोला-३१२२०५ (चित्तौड़गढ़) राज.

प्रासङ्गिक

समाजसेवा के जरिये करें आर्य समाज का प्रचार-प्रसार : अर्जुनदेव चड्ढा

श्री अर्जुनदेव चड्ढा जी, स्वभाव से ही समाजसेवी हैं, वैदिक सिद्धान्तों को जीवन्त कर रहे हैं, यही तो आर्यसमाज का कार्य है समाज सेवा और आर्यसमाज का प्रचार दोनों भिन्न-भिन्न कार्य नहीं है, आर्यसमाज का प्रचार समाज सेवा ही है , लोगों को भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करना यदि सेवा है, तो सिद्धान्तों के निर्भ्रान्त ज्ञान देना भी तो समाज सेवा ही है। प्रभु आपको अधिक शक्ति सामर्थ्य दें, यह मिशन निर्बाध चले। - सम्पादक

सेवा कार्य सबसे कठिन कार्य होता है। कहते हैं - बिना सेवा के मेवा नहीं मिलता। करो सेवा पाओ मेवा। भगवान मनु ने भी कहा है -

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः ।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्यायशोबलम् ॥

अर्थात् सेवा करने से आयु, विद्या, यश और बल की वृद्धि होती है। गोस्वामी तुलसीदास ने लिखा है - सेवा काम कठिन जग जाना। अर्थात् सेवा बहुत कठिन कार्य होता है। अतः सेवा का बड़ा महत्व है। सेवा करके हम बहुमत कुछ प्राप्त कर सकते हैं। सेवा का क्षेत्र बड़ा विस्तृत है। यथा-देशसेवा, समाजसेवा, गौसेवा, गुरुसेवा, माता-पिता की सेवा, बच्चे की सेवा, पति सेवा, असहाय सेवा आदि। इन सेवाओं में समाजसेवा का प्रमुख स्थान है। सेवा करने से दूसरों के ऊपर बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ता है। इसके द्वारा उनके हृदय पर विजय प्राप्त की जा सकती है।

समाज सेवा क्या है ? समाजसेवा है - गरीबों की सहायता करना, बेसहारों को सहारा देना, जरुरतमंद की आर्थिक मदद करना, वस्त्रहीन को वस्त्र प्रदान करना, निःशुल्क दवा का वितरण करना, निर्धन विद्यार्थियों को विद्यालयी गणवेश व पाठ्यसामग्री का वितरण करना, जहां अभाव हो उस अभाव को यथाशक्ति मिटाने का प्रयत्न करना आदि। इन कठिन कार्यों में से हम किसी भी कार्य को करके आर्यसमाज के नाम को रोशन कर सकते हैं। ऐसी बहुत सी संस्थाएं हैं जो इन कार्यों को कर रही हैं तो हम भी क्यों न इक कार्यों को करके आर्यसमाज का नाम गली-मुहल्ले, गांव-गांव में पहुंचा दें। इन कार्यों को करने से तत्स्थानों में आर्यसमाज की मुहर लग जाए, फिर वहां शनैः शनैः वैदिक ज्ञान का भी संदेश दे सकते हैं। पहले अपनी पहचान बनानी होगी। बिना अपनी पहचान बनाए समाज में अपनी छाप नहीं छोड़ सकते। सेवाकार्य लोगों के हृदय में महत्वपूर्ण स्थान बना लेता है। इसके द्वारा दिल पर विजय प्राप्त कर सकते हैं और सच्चे मानव की श्रेणी में आ सकते हैं।

मैंने ऐसा तमाम सेवा के कार्य किए हैं, जैसे सड़क पर ठिठुरते लोगों को मैंने कम्बल व रजाई ओढ़ाकर आर्यसमाज का परिचय दिया है। निर्धन विद्यार्थियों को पाठ्यसामग्री, विद्यालय गणवेश, बैग बांटकर आर्यसमाज का नाम रोशन किया है। जिन लोगों के बीच कोई नहीं जाता, ऐसे गाड़ियां लुहारों के परिवारों के बीच यज्ञ कार्य सम्पन्न करके आर्यसमाज का संदेश दिया है। प्यासे लोगों को शर्बत व जल पिलाकर एक सुख अनुभूति की है। अनाथाश्रमों में बच्चों को उनकी जरुरत की चीजें पहुंचाई है। नए-पुराने कपड़े इकट्ठा करके निर्धन परिवारों के मध्य जाकर सेवाकार्य किया है। पक्षियों के लिए परिंडे बांधे हैं। जेल में बंद कैदियों को भी सहायता सामग्री पहुंचाई है। नशे के लत में धुत्त रहने वाले नशेड़ियों के बीच जाकर सेवा के माध्यम से नशे की हानियों को बतलाया है।

निर्धन-परिवारों के लड़के-लड़कियों के विवाह में उपहार व आर्थिक मदद करके उनके हृदय में आर्यसमाज के प्रति निष्ठा उत्पन्न की है। ऐसे अनेक कार्य मैंने किए हैं,

जो सेवा से संबंधित है। इन समस्त कार्यों से लोगों ने आर्यसमाज को जाना है और पहचाना है। ऐसे कार्यों से आर्यसमाज के प्रति लोगों में जो भ्रांति है वह स्वतः समाप्त हो जाती है। इन कार्यों से प्रथम हम अपनी पहचान बना लें, तत्पश्चात् अपना वैदिक संदेश प्रदान करने से उनके मन में स्थायी प्रभाव पड़ जाता है।

उस समय की याद आती है जब विद्यालयों में जाने पर आर्यसमाज का नाम सुनते ही लोग नाक-भौं सिकोड़ते थे, बिदकते थे, बात भी सुनने को राजी नहीं थे, किन्तु जब उनके मध्य मैं निर्धन बच्चों की मदद के लिए सामग्री लेकर गया तो उन्होंने सादर बैठाया। इस कार्य के पश्चात् शनैः शनैः विद्यालय में आर्य समाज के लिए अपना स्थान बना लिया। उनके मन में आर्यसमाज के प्रति जो भ्रान्त धारणा थी, वह मिट गई।

गुजरात के भुज में जब भूकम्प आया था उस समय आर्यसमाज संस्था की ओर से एक ट्रक हवन सामग्री और घी गया ताकि हवन के माध्यम से पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचाया जा सके। इस कार्य से आर्यसमाज की बड़ी छबि बनी। यह भी समाजसेवा का कार्य है जो पर्यावरण संरक्षण से जुड़ा हुआ है। ऐसी प्रत्येक प्राकृतिक आपदाओं में आर्यसमाज का योगदान होना चाहिए।

सेवा का सीधा संबंध हृदय से है। जो कार्य हृदय से जुड़ जाता है वह अमिट हो जाता है। भूखे को पहले भोजन चाहिए ज्ञान नहीं। प्यासे को पहले पानी चाहिए, ध्यान नहीं। रोग पीड़ित को पहले दवा चाहिए, उपदेश नहीं। बेघर-बार को पहले घर चाहिए, संदेश नहीं। असहाय को पहले सहायता चाहिए आदर्शवादी बातें नहीं। ठिठुरते को पहले वस्त्र चाहिए, लच्छेदार भाषण नहीं। यदि हम इन कार्यों से अपने को जोड़ लें तो अपना वैदिक संदेश आसानी से जन-जन तक पहुंचा सकते हैं। किया गया कार्य स्वयं में बहुत बड़ा उपदेश है। आचरण की भाषा मौन होती है। सदाचारी का हर क्रियाकलाप पल-पल मौन उपदेश देता है। एक बार सेवाकार्य से जुड़ करके तो देखिए, स्वतः इस कार्य को महत्व देना प्रारंभ कर देंगे। अपने साथ आर्यसमाज का बैनर जरूर रखें। आर्यसमाज के झंडे के नीचे कार्य करें। इससे आर्यसमाज की पहचान बनेगी और लोगों के मध्य अच्छी छबि उभरेगी। आर्यसमाज पहुंचा दलितों की बस्ती में- इस शीर्षक से छपा समाचार लोगों को खूब पसंद आया। मुझे भी दलितों की बस्तियों में जाकर एक नई अनुभूति हुई। एकबार अस्पताल में रोगियों का हालचाल तो पूछने जाए, विद्यालय में जाकर गरीब बच्चों के मासूम चेहरे तो देख आइए, मजदूरों की बस्तियों में नंगे पांव घूमते नन्हें-मुन्ने बच्चों को निहारिए, ठंड में ठिठुरते और गर्मी में तपते मजदूरों का निरीक्षण कीजिए। उस घर को तलाश लीजिए, जिसमें अभावों में पली-बढ़ी कन्या का विवाह होने वाला है। किसी रात में किसी गांव का दृश्य देख आइए। एक से एक सेवा के अवसर मिलेंगे। आर्यसमाज का नाम जन-जन पहुंचा सकेंगे।

सेवा के द्वारा उठी हुई सूक्ष्म तरंगें आपके जीवन को सुखद अनुभूतियों से अभिभूत कर देंगी। आप सच्चे अर्थों में मानव कहलाने के अधिकारी होंगे। मैथिलीशरण गुप्त की ये पंक्तियां सार्थक हो जाएंगी। वही है मनुष्य जो मनुष्य के लिए मरे। जीवन में सुख-दुख का सम्मिश्रण करें। यदि आपके पास समृद्धि है तो उससे अपने जरुरतमंद लोगों को जरुर सहायता पहुंचाइए। उनके दुखों को दूर करने का प्रयत्न कीजिए। धनी धन के द्वारा, बली बल के द्वारा, ज्ञानी ज्ञान के द्वारा, चिन्तक चिन्तन के द्वारा, विचारक विचार के द्वारा, नाना प्रकार से सेवा की जा सकती है।

कोटा क्षेत्र में मैंने अनेक सेवाकार्य किए हैं। इनसे आर्यसमाज का नाम रोशन हुआ है। आप भी अपने क्षेत्र में इस प्रकार के कार्य करके आर्यसमाज की पहचान बना सकते हैं। यदि कुछ भी नहीं कर सकते तो घी और हवन सामग्री लेकर निर्धन लोगों के मध्य जाकर हवन ही करें। इससे भी अच्छी छवि बनेगी। यह कार्य कठिन अवश्य है किन्तु यह बड़ा प्रभावशाली तरीका है। सेवा कार्य के द्वारा ईसाई लोगों के बीच जाने में जरा भी नहीं हिचकते। उनकी सेवा में कोई कसर नहीं छोड़ते। हम भी इस दिशा में कदम बढ़ाएं।

सेवा से लोगों को सुख मिलता है। सुख कौन नहीं चाहता। सेवा से मनुष्य क्या पशु-पक्षी, वृक्ष-वनस्पति भी आनन्द की अनुभूति करते हैं। आर्यसमाज में जीवित पितरों का श्राद्ध और तर्पण सेवा से ही संबंधित है। जीवित

पितरों को सेवा के द्वारा ही संतुष्ट किया जा सकता है। आज इस कार्य से लोग विमुख होते दिखाई दे रहे हैं। इसी कारण वृद्धाश्रमों की मांग बढ़ रही है। पितरों की बिदाई के अवसर पर विशेष पक्ष का चयन कर लिया गया था, जिसे आज रुढ़ि की रस्सी से जकड़कर श्राद्ध पक्ष का गलत अर्थ लगाकर पाखण्ड फैलाया जा रहा है। जीवित की सेवा तो कर नहीं सकते, मरे पश्चात उसकी सेवा की जाती है। यह कहां तक उचित है। आर्यसमाज सामूहिक रुप से सेवाकार्य को महतेव दे। कथनी नहीं अपितु करनी से दिखाए।

आइए, हम छोटे-छोटे सेवाकार्यों से जुड़कर आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार में योगदान दें। इसमें कोई विद्वता और बहुत स्वाध्याय की भी जरूरत नहीं है, हाँ, श्रद्धाभाव होना आवश्यक है। इस कार्य को प्रारंभ करके इसकी उपलब्धि का अंदाजा स्वयं लगा सकेंगे। व्यर्थ के वाद-विवाद में न पड़कर हम अपना समय और ऊर्जा सेवाकार्यों में लगाएं और आर्यसमजा का प्रचार करें। एक निवेदन के साथ में अपनी बात को समाप्त करना चाहता हूँ - हम आर्यसमाज के लोग एक दूसरे के विरोध में व्यर्थ का समय नष्ट न करें। टांग खिंचाई न करें, निन्दा न करें। न ही परस्पर लड़े-झगड़ें। इन सारी शक्तियों को सेवाकार्यों में लगाए। अपना-अपना क्षेत्र चुन लें। जो जिस क्षेत्र में जाना चाहे, जाये। केवल उपदेश नहीं अपितु करें दिखाएँ। आज इसी की आवश्यकता है। हम चार दीवारी से बाहर आकर विस्तृत क्षेत्र में अपना कार्य करें। प्रतिष्ठा व सम्मान अपने आप मिलेगा।

पता : ४-५-२८, विज्ञाननगर, कोटा (राज.)

आर्य पर्वों की सूची

विक्रमी संवत् २०७६–२०७७ तदनुसार सन् २०२० ई.

क्र.	पर्व नाम		चन्द्र तिथि	सम्वत्	अंग्रेजी तिथि	दिवस
१.	लोहड़ी		माघ कृष्ण ३	२०७६	१३-०१-२०२०	सोमवार
२.	मकर संक्राति		माघ कृष्ण ५	२०७६	१५-०१-२०२०	बुधवार
३.	गणतंत्र दिवस		माघ शुक्ल २	२०७६	२६-०१-२०२०	रविवार
४.	बसन्त पंचमी		माघ शुक्ल ५	२०७६	३०-०१-२०२०	गुरुवार
५.	सीताष्टमी		फाल्गुन कृष्ण ८	२०७६	१६-०२-२०२०	रविवार
६.	महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव		फाल्गुन कृष्ण-१०	२०७६	१८-०२-२०२०	मंगलवार
७.	ऋषिबोधोत्सव (शिवरात्रि)		फाल्गुन कृष्ण -१३	२०७६	२१-०२-२०२०	शुक्रवार
८.	लेखराम बलिदान दिवस		फाल्गुन शुक्ल-३	२०७६	२६-०२-२०२०	बुधवार
९.	नवसस्येष्टि (होली) मिलन पर्व		फाल्गुन पूर्णिमा	२०७६	०९-०३-२०२०	सोमवार
१०.	नवसम्वतसराम्भः (आर्यसमाज स्थापना दिवस)		चैत्र शुक्ल - १	२०७७	२५-०३-२०२०	बुधवार
११.	रामनवमी		चैत्र शुक्ल- ९	२०७७	०२-०४-२०२०	गुरुवार
१२.	बैशाखी		बैसाख कृष्ण-६	२०७७	१३-०४-२०२०	सोमवार
१३.	पं. गुरुदत्त विद्यार्थी जन्म दिवस		बैसाख शुक्ल -३	२०७७	२६-०४-२०२०	रविवार
१४.	हरितृतीया (हरियाली तीज)		श्रावण शुक्ल- ३	२०७७	२३-०७-२०२०	गुरुवार
१५.	रक्षा बंधन (श्रावणी उपाकर्म)	वेद प्रचार सप्ताह	श्रावण पूर्णिमा	२०७७	०३-०८-२०२०	सोमवार
१६.	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी		भाद्रपद कृष्ण ८	२०७७	१२-०८-२०२०	बुधवार
१७.	स्वतंत्रता दिवस		भाद्रपद कृष्ण ११	२०७७	१५-०८-२०२०	शनिवार
१८.	दशहरा (विजयादशमी)		आश्विन शु. १०	२०७७	२६-१०-२०२०	सोमवार
१९.	गुरुवर स्वामी विरजानन्द जन्मदिवस		आश्विन शु. १२	२०७७	२८-१०-२०२०	बुधवार
२०.	दीपावली (ऋषि निर्वाणोत्सव)		कार्तिक अमावस्या	२०७७	१४-११-२०२०	शनिवार
२१.	स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस		मार्गशीर्ष शुक्ल ९	२०७७	२३-१२-२०२०	बुधवार

विशेष टिप्पणी : १. आर्य समाजें इन पर्वों को उत्साहवर्धक मनाएँ। २. देशी तिथियों में घट बढ़ होने से पर्व तिथि में परिवर्तन हो सकता है।

भूमिका : आज सब कि हमारे देश की सरकार "बेटी बचाओं आन्दोलन" चलाने पर मजबूर है, कारण विकृत मानसिकता और सामाजिक परिस्थितियों के होते हुये माता के गर्भ में पल रही बेटियों को जन्म लेने से पूर्व ही मार दिया जाता है, यही नहीं हमारे देश में लाखों बेटियों को उनके माता-पिता अपने ऊपर एक बोझ समझते हैं, ऐसे में मैं अगर गर्व से कहता हूं कि मैं तीन पुत्रियों का पिता हूं जो कि मेरी मेरे लिए वरदान हैं व सर्वोत्तम पूंजी हैं, तो इस का श्रेय महर्षि दयानन्द सरस्वती व उनके द्वारा सन् १८७५ में स्थापित आर्यसमाज को है।

"मैं महर्षि दयानन्द सरस्वती का ऋणी हूँ।"

प्रासङ्गिक

भारतेन्दु सूद

आज सब कि हमारे देश की सरकार "बेटी बचाओं आन्दोलन" चलाने पर मजबूर है, कारण विकृत मानसिकता और सामाजिक परिस्थितियों के होते हुये माता के गर्भ में पल रही बेटियों को जन्म लेने से पूर्व ही मार दिया जाता है, यही नहीं हमारे देश में लाखों बेटियों को उनके माता-पिता अपने ऊपर एक बोझ समझते हैं, ऐसे में मैं अगर गर्व से कहता हूं कि मैं तीन पुत्रियों का पिता हूं जो कि मेरी मेरे लिए वरदान हैं व सर्वोत्तम पूंजी हैं, तो इस का श्रेय महर्षि दयानन्द सरस्वती व उनके द्वारा सन् १८७५ में स्थापित आर्यसमाज को है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने समय से कैंसर रोग के समान भयानक रुप से समाज को कमजोर करने वाली सभी सामाजिक बुराईयों के विरुद्ध युद्ध छेड़ा था। महर्षि ने उस समय जबकि भारत में महिलाओं की सामाजिक स्थिति अत्यन्त दयनीय थी, स्त्री पुरुषों की समानता, स्त्रियों की शिक्षा व उनके परिवार के संचालन में उनकी प्रमुख भूमिका को सही सन्दर्भ में प्रस्तुत कर क्रान्ति की थी। उन दिनों अधिकतर महिलायें अपने घरों में भी गुलामों की भांति रहा करती थी। महिलाओं और दलितों को वेदों और दूसरे शास्त्रों के अध्ययन से रोकने वाली अनधविश्वासों से परिपूर्ण व्यवस्था को स्वामी जी ने अपने पैरों तले रौंद डाला और घोषणा की कि सभी स्त्रियों व दलितों को शिक्षा व वेदों के पढ़ने-पढ़ाने का ब्राह्मणों के समान ही अधिकार है। उन्होंने कहा वेद सब के लिये है, सभी को वेदाध्ययन का अधिकार है, जन्म-जाति, रंग भेद और भौगोलिक सीमाएं इसमें बाधा नहीं हो सकते।

उनका कहना था कि शिक्षा स्त्रियों की सभी समस्याओं के निवारण के लिए रामबाण औषधि है। हमारा समाज इस अशिक्षा के कारण ही दुर्बल हुआ है। आज महर्षि दयानन्द सरस्वती को स्वर्ग सिधारने के १३२ वर्ष बाद यह सिद्ध हो चुका है कि उनके इस सम्बन्ध में कहे गये वचन सत्य थे। उनसे प्रेरणा लेकर, उनके भक्तों ने उनकी असामयिक मृत्यु के कुछ ही समय बाद पंजाब में प्रथम महिला विद्यालय आर्य कन्या महाविद्यालय जालन्धर की सन् १८८९ में स्थापना कर उसे पूरा किया। यही नहीं, उनके अनुयायियों द्वारा एक हजार से अधिक डी.ए.व्ही. संस्थायें एवं गुरुकुल देश के हर कोने में खोले जो शिक्षा के प्रचार व प्रसार के कार्य में लगे हुये और यही सभी शिक्षा संस्थायें उनके सच्चे स्मारक हैं। मैंने उनसे सीखा कि माता व पिता को अपनी पुत्रियों का ध्यान रखने वाला सच्चा सहृदय मित्र व संरक्षक होना चाहिए और यह भी जाना कि हम अपनी पुत्रियों को सबसे बड़ा यदि कोई उपहार दे सकते हैं तो वह शिक्षा एवं अच्छे संस्कार ही है।

आज यदि मैं घर में बैठा हुआ या फिर यात्रा करता हुआ भी ईश्वर से जुड़ा हुआ रहता हूँ तो यह भी स्वामी दयानन्द जी का ही प्रभाव है, जिन्होंने बताया कि ईश्वर निराकार, अजन्मा, सर्वव्यापक और सर्वान्तर्यामी है। उसको कहीं बाहर ढूंढने की आवश्यकता नहीं है अपितु वह हमारे अन्दर ही है बात केवल अन्दर झांकने की है। हम उपासना द्वारा ईश्वर से जुड़ सकते हैं। चाहे मुझ पर कितनी

बड़ी मुसीबत आन पड़े या बहुत बड़ा प्रलोभन हो, मैं किसी भी हालत में न किसी चमत्कारी बाबा के पास जाता हूं न जाऊंगा, यह महर्षि दयानन्द सरस्वती की शिक्षा का ही प्रभाव है।

एक अन्य लाभ जो मुझे उनकी शिक्षाओं से हुआ है, वह यह कि सत्य को सर्वोपरि स्वीकार करना और तर्क से सत्य की पहचान करना। इससे मैं सभी प्रकार के अन्ध विश्वासों से मुक्त हो गया। मुझे किसी धर्म गुरु या ज्योतिषी के पास किसी अच्छे दिन या मुहूर्त पूछने जाने की आवश्यकता नहीं है। मेरे लिए सभी दिन एक समान है व सभी दिन अच्छे दिन है और मेरे जीवन का वर्तमान समय मेरे लिए सबसे अच्छा समय है। जब कोई व्यक्ति सत्य को सर्वोपरि मान कर उसे अपने जीवन में धारण करता है तो वह स्वतः निर्भय व निडर हो जाता है। यह सत्य ही जीवन में प्रसन्नता, सुख व आनन्द का कारण है।

अंत में मैंने उनसे यह जाना कि सभी मनुष्य जन्म से समान है। मनुष्य विद्या अध्ययन कर व शुभ गुणों को धारण कर ही ब्राह्मण बनता है जिसमें उसके जन्म व कुल आदि का महत्व नहीं होता। इस ज्ञान ने मुझे सभी प्रकार के पक्षपात व अन्यायपूर्ण व्यवहारों से बचाया है व मुझे सबल व सक्षम भी बनाया है।

पता : वैदिक थाट्स चण्डीगढ़

सन्त-वाणी

भय के आगे घुटने न टेको

भय मानव जीवन का सबसे बड़ा शत्रु है जो भी परीक्षा की घड़ी जो भी संकट जो भी अभाव तुम्हारे जीवन में आया है उससे कदापि न डरें, उसका डटकर मुकाबला कीजिए। यदि आप में दृढ़ संकल्प है व गजब का आत्मविश्वास है तो भय को ही आपसे भयभीत होना होगा। अतः यह भूल जाइए कि आने वाली विषम परिस्थितियां आपका कुछ बिगाड़ पायेगी। परेशानियां एवं अभाव मूर्ख लोगों को ही डरा सकती है। आत्मविश्वासी व्यक्ति का कुछ नहीं बिगाड़ पाती। जब भी मनुष्य भयभीत होता है तो वह भूला देता हैकि इस ब्रह्माण्ड का रचयिता इसका पालक एवं संचालक भगवान ही उसका रक्षक है। हमें अपने दिल में यह बात बिठा लेनी चाहिए कि भय नाम की वस्तु अवास्तविक है कोरी कल्पना है इससे अधिक कुछ भी नहीं। विषमता एवं निराशा के विचारों को अपने दिल से निकाल दो,आपके दिल में यदि आशा एवं विश्वासपूर्ण विचार होंगे तो निराशा एवं हताशा रुपी गन्दे विचार आपके दिन में प्रविष्ट हो ही नहीं सकते। सदैव ऐसी कोशिश करो कि आपके दिल का छोटे-से छोटा कोना भी पल भर के लिए खाली न रह सके। मन को सदैव सुन्दर एवं स्वस्थ विचारों से भरपूर रखो। उसमें दसैव रचनात्मक एवं आशावादी विचार रखिए। अपने मन में इस कदर शुभ विचार भर दो कि इसमें अशुभ विचार प्रविष्ट ही न हो सके। ऐसी हालत में वह खुद ही लौटकर वापिस हो जायेंगे। आपके दिल में यदि कभी उत्साह कम करने वाले विचार पनपने लगें तो महापुरुषों के विषय में विचार करना हितकर रहेगा। अपने दिल में उनके जीवन की घटनाओं को दोहाइए।

आपकी योजनाओं के विपरीत जो भय समाया हुआ है वह मिथ्या है आपके दुर्बल मन की कोरी कल्पना है बहुत से लोगों के स्वभाव में कायरता होती है लेकिन वे लोग इसे अपने उत्साह एवं निश्चय से दूर कर सकते है अपनी आत्मा के स्वरुप को अगर आप ध्यान से देखें तो आपको मालूम होगा कि वह पूर्ण रुप से निर्भय है तथा उत्साह एवं आत्मविश्वास के भावों से ओत-प्रोत है दुनिया की कोई भी वस्तु ऐसी नहीं जो उसे हानि पहुंचा सके इसी शक्ति को कायरता को दूर करने के लिए दिल में बसाइए यदि आप गंभीरता से सोचेंगे तो आपको यह बात का मालूम हो जायेगा कि मनुष्य भयभीत क्यों होता है। वह बेहद जरुरी है कि आप परमपिता परमात्मा पर भरोसा करके संदेहात्मक वृत्तियों को सदैव ही खुद से दूर रखें आप जो चाहें करें लेकिन भय के आगे घुटने न टेकिए।

सामयिक

बात सिर्फ शराब की नहीं

– डॉ. वेदप्रताप वैदिक

शराब के बढ़ते चलन के पीछे जो तर्क दिख रहे हैं, वे सतही हैं। उनके पीछे छिपे रहस्यों को हम अगर जान पायेंगे तो दूसरी आधुनिक बीमारियों के मूल तक पहुंचने में भी हमें आसानी होगी और उनका इलाज करना भी कठिन नहीं होगा। हमारे नौजवान शराब इसलिए पी रहे हैं कि उनके हाथ में पैसे ज्यादा आ रहे हैं वे अपना तनाब मिटाना चाहते हैं और माता-पिता उन पर समुचित ध्यान नहीं दे पाते हैं। ये तीनों तर्क अपनी जगह ठीक नहीं है, लेकिन ये ऊपरी हैं। असली सवाल यही है कि हमारा नौजवान शराब को ही अपना एकमात्र त्राणदाता क्यों मान रहा है। और इस गंभीर भूल का पता चलने पर भी माता-पिता और समाज की तरफ से कोई उचित कार्रवाई क्यों नहीं होती ? इसका कारण यह है कि भौतिक विकास की दौड़ में पागल हुआ हमारा समाज बिल्कुल नकलची बनता चला जा रहा है। वह कहता है कि हर मामले में पश्चिम की नकल करो। अपना दिमाग गिरवी रख दो। अपने मूल्यमानों, आदर्श, अपनी परम्पराओं को दरी के नीचे सरका दो। यदि शराब पीना, मांस खाना, व्यभिचार करना, हिंसक बनना, कर्ज लेकर ऐश करना आदि को पश्चिमी समाज में बुरा नहीं माना जाता तो हम उसे बुरा क्यों मानें ?

एक ताजा सर्वेक्षण से पता चला है कि भारत के कुछ नगरों के ४५ प्रतिशत नौजवानों को शराब की लत पड़ गई है। दिल्ली सहित देश के ग्यारह शहरों के २००० नौजवानों के सर्वेक्षण से ये आंकड़े मिले है। इन नौजवानों की उम्र १५ से १९ वर्ष है। पिछले २० साल में इस लत का असर दुगुना हो गया है। कोई आश्चर्य नहीं कि अगले दस साल में देश के लगभग शत प्रतिशत नौजवान शराबखोर बन जाएं। जरा सोचें कि अगर हालत यही हो गई तो २१वीं सदी के भारत का क्या होगा ? हम गर्व करते हैं कि आज नौजवानों की जितनी संख्या भारत में हैं, दुनियां के किसी भी देश में नहीं है। भारत अगर विश्व शक्ति बनेगा तो इस युवा शक्ति के दम पर, लेकिन अगर हमारी युवा शक्ति इन पश्चिमी लतों की शिकार बन गई तो भार आज जिस बिन्दु पर पहुंचा है, उससे भी नीचे खिसक जाएगा। यह मामला सिर्फ शराब का ही नहीं है, शराब जैसी अन्य दर्जनों लतों का है, जो भारत के भद्रलोक की नसों में मीठे जहर की तरह फैलती जा रही है।

शराब के बढ़ते चलन के पीछे जो तर्क दिख रहे हैं, वे सतही हैं। उनके पीछे छिपे रहस्यों को हम अगर जान पायेंगे तो दूसरी आधुनिक बीमारियों के मूल तक पहुंचने में भी हमें आसानी होगी और उनका इलाज करना भी कठिन नहीं होगा। हमारे नौजवान शराब इसलिए पी रहे हैं कि उनके हाथ में पैसे ज्यादा आ रहे हैं वे अपना तनाव मिटाना चाहते हैं और माता-पिता उन पर समुचित ध्यान नहीं दे पाते हैं। ये तीनों तर्क अपनी जगह ठीक नहीं है, लेकिन ये ऊपरी हैं। असली सवाल यही है कि हमारा नौजवान शराब को ही अपना एकमात्र त्राणदाता क्यों मान रहा है। और इस गंभीर भूल का पता चलने पर भी माता-पिता और समाज की तरफ से कोई उचित कार्रवाई क्यों नहीं होती ? इसका कारण यह है कि भौतिक विकास की दौड़ में पागल हुआ हमारा समाज बिल्कुल नकलची बनता चला जा रहा है। वह कहता है कि हर मामले में पश्चिम की नकल करो। अपना दिमाग गिरवी रख दो। अपने मूल्यमानों, आदर्श, अपनी परम्पराओं को दरी के नीचे सरका दो। यदि शराब पीना, मांस खाना, व्यभिचार करना, हिंसक बनना, कर्ज लेकर ऐश करना आदि को पश्चिमी समाज में बुरा नहीं माना जाता तो हम उसे बुरा क्यों मानें ? आधुनिक दिखने, प्रगतिशील होने, सेकुलर बनने, भद्र लगने के लिए जो भी टोटके करने पड़े, वे हम करें। चूके क्यों ? जरा गौर करें कि सर्वेक्षण क्या कहता है ?

उसके अनुसार हमारे नौजवान ज्यादा शराब कब पीते हैं ? क्रिसमस या वेलेंटाइन डे के दिन ये दोनों त्योहार

क्या भारतीय हैं ? हमारे ईसाई भाई क्रिसमस मनाएं, यह तो समझ में आता है, लेकिन जो शराबखोरी करते हैं, उन आम नौजवानों का ईसा मसीह या क्रिसमस से क्या लेना-देना है? शराब पीना ही उनका क्रिसमस है और वह इसलिए है कि क्रिसमस पश्चिमी समाज का त्योहार है। होली और दीपावली पर उन्हें खुमारी नहीं चढ़ती, लेकिन क्रिसमस पर चढ़ती है, यह किस सत्य का प्रमाण है ?

दिमागी गुलामी की यह गुलामी वेलेंटाइन डे पर प्रकट होती है। जिन भारतीय नौजवानों को महात्मा वेलेंटाइन की दंतकथा का भी सही-सही पता नहीं है, वे आखिर वेलेंटाइन डे से भी सौगुना अधिक मादक वसंतोत्सव है, लेकिन वे उससे अपरिचित हैं ? क्यों हैं ? इसीलिए कि वेलेंटाइन डे पश्चिमी है, आयातित है और आधुनिक है। शराब भी वे प्रायः विदेशी ही पीते हैं। ठर्रा पी लें तो उन्हें दारुकुट्टा या पियक्कड़ कहने लगेंगे। यह कड़वी बात उन्हें कोई कहता नहीं हैं, लेकिन सच्चाई यही है कि इन नौजवानों को अपने भारतीय होने पर गर्व नहीं है। वे नकलची बने रहने में गर्व महसूस करते हैं।

अगर ऐसा नहीं है, तो मैं पूछता हूं कि आज भारत के ९० प्रतिशत से अधिक शहरी नौजवान पैंट-शर्ट क्यों पहनते हैं ? टाई क्यों नहीं लगाते हैं ? उन्हें कुर्ता-पायजामा पहनने में शर्म क्यों आती है ? स्कूल-कालेजों में कोई भी अध्यापक और छात्र धोती पहने क्यों नहीं दिखता ? कोई वेश-भूषा कैसी भी पहने, उसमें कोई बुराई नहीं है, लेकिन कोई अपनी स्वाभाविक वेश-भूषा, पारम्परिक वेश-भूषा को तो हीन भाव से देखे और अपने पुराने मालिकों की वेशभूषा को गुलामों की तरह दैवीय दर्जा देने लगे तो उसे आप क्या कहेंगे ? ठंडे देशों में शराब का प्रचलन है और टाई समेत थ्री पीस सूट पहने जाते हैं, लेकिन भारत जैसे गर्म देश में भी इन चीजों से चिपके रहना कौन सी आधुनिकता है ? खुद को असुविधा में डालकर नकलची बने रहना तो काफी निचले दर्जे की गुलामी है। यदि ऐसी गुलामी भारत में बढ़ती चली जाए तो उसके सम्पन्न होने पर लानत है।

यहां मामला शराब और वेश-भूषा का ही नहीं है, सबसे गंभीर मामला तो भाषा का है। आजादी के ७२ साल बाद भी अंग्रेजी इस देश की पटरानी बनी हुई है और हिन्दी नौकरानी। किसी को गुस्सा तक नहीं आता। बुरा तक नहीं लगता। राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री से लेकर बाबुओं और चपरासियों ने भी अंग्रेजी की गुलामी का व्रत धारण कर रखा है। शराब की गुलामी से भी ज्यादा खतरनाक अंग्रेजी की गुलामी है। विदेशी भाषाओं और ज्ञान-विज्ञान से फायदा उठाने का मैं जबर्दस्त समर्थक हूँ, लेकिन अपनी मां पर हम थूंके और दूसरे की मां के मस्तक पर तिलक लगाएं, इससे बढ़कर दुष्टता क्या हो सकती है ? यह दुष्टता भारत में शिष्टता कहलाती है। यदि आप अंग्रेजी नहीं बोल पाएं तो इस देश में आपको कोई शिष्ट और सभ्य ही नहीं मानेगा। देखा आपने, कैसा सूक्ष्म सूत्र जोड़ रहा है शराब, पैंट-शर्ट और अंग्रेजी को। हम यह भूल जाते हैं कि शराब ने रोमन और गुलाम जैसे साम्राज्यों की जड़ों में मट्ठा डाल दिया और विदेशी भाषा के जरिए आज तक दुनिया का कोई राष्ट्र महाशक्ति नहीं बना, लेकिन इन मिथ्या विश्वासों को हम बंदरिया के बच्चे की तरह छाती से चिपकाएं हैं। दुनिया में हमारे जैसा गुलाम देश कौन सा है ?

इस गुलामी को बढ़ाने में कामनवेल्थ का योगदान अप्रतिम है। कामनवेल्थ को क्या हमने कभी कामन बनाने की आवाज उठाई ? उसका स्थायी स्वामी ब्रिटेन ही क्यों है? हर दूसरे-तीसरके साल उसका अध्यक्ष क्यों नहीं बदलता गुट निरपेक्ष आंदोलन की तरह या सुरक्षा परिषद की तरह ? उसकी भाषा अंग्रेजी क्यों है, हिन्दी क्यों नहीं ? कामनवेल्थ के दर्जनों देश मिलकर भी भारत के बराबर नहीं है। हिन्दी दुनिया की सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। दुर्भाग्य तो यह है कि आज देश में हमारे राजनीतिक दल और यहां तक कि साधु-महात्मा भी शक्ति संधान और पैसा महान में उलझ गए हैं। दयानन्द, गांधी लोहिया की तरह कोई ऐसा आन्दोलन नहीं चला रहे, जो भारत के भोजन, भजन, भाषा, भूषा और भेषज को सही पटरी पर लाए। इस पंचभकार का आह्वान अगर भारत नहीं करेगा तो पंचमकार, मद्य, मांस, मीन, मुद्रा, मैथुन का मार्ग तो पश्चिम ने हमें दिखा ही रखा है पश्चिम तो अब उठकर गिर रहा है, हम उठे बिना ही गिर जायेंगे।

पता : २४२, सेक्टर ५५, गुड़गांव-१२२०११

सैद्धान्तिक

"सत्यार्थप्रकाश सद्धर्म का प्रकाशक ग्रन्थ"

– मनमोहन कुमार आर्य

मनुष्य एक चेतन प्राणी है। चेतन का स्वभाव गुण व कर्म की क्षमता से युक्त होता है। न केवल मनुष्य अपितु सभी चेतन प्राणी पशु व पक्षी आदि भी स्वाभाविक ज्ञान से युक्त होकर जीवन भर कर्म करने में प्रवृत्त रहते हैं। जिन कर्मों से मनुष्य अन्य मनुष्यों व प्राणियों को सुख देने सहित समाज व देश का हित करते हैं, उन्हें कर्त्तव्य व धर्म संज्ञक कर्म कहा जा सकता है। मनुष्य का जीवन भी जन्म व मृत्यु के मध्य में विद्यमान रहता है जहां वह अपनी भिन्न भिन्न अवस्थाओं में नाना प्रकार के कर्मों को करता है। शैशव व किशोरावस्था में उसका ज्ञान सीमित रहता जिस कारण उसके कर्म भी उसके ज्ञान के अनुरुप साधारण कोटि के होते हैं। जब वह गुरुकुल, स्कूल व कालेज में ज्ञान प्राप्त कर लेता है तो अर्जित ज्ञान के अनुरुप ही वह कर्म करता है। स्कूलों व कालेज में तो उसे नौकरी व व्यवसाय करने की प्रेरणा ही मिलती है। उसी के अनुरुप वह अपना व्यवसाय चुनता व उसे प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करता है। बहुत से लोग इच्छित काम ढूंढ पाने में सफल हो जाते हैं और बहुत से लोग सफल नहीं हो पाते। उन्हें जो भी छोटा व बड़ा अच्छा व अप्रिय कोटि का काम मिलता है, उसी को उन्हें अपनाना पड़ता है। वेदेतर हमारे जितने भी मत हैं उनमें हमें कहीं सत्य को जानने व उसके अनुरुप आचरण करने की प्रेरमा नहीं मिलती। ईश्वरीय ज्ञान वेद ही ऐसे ग्रन्थ हैं जो मनुष्य को असत्य पथ का त्याग कर सत्य पथ पर चलने की प्रेरणा करते हैं। सत्य पथ पर चलने से मनुष्य का शरीर स्वस्थ रहता है, बल ह्रास व न्यूनता नहीं होत व उसका ज्ञान व विज्ञान दिन प्रतिदिन, स्वाध्याय, सन्ध्या, चिन्तन व मनन आदि कार्यों से बढ़ता रहता है। इसका परिणाम उसे अन्यों की तुलना में अधिक सफलताओं व सुखी जीवन के रुप में प्राप्त होता है। वह ईश्वर, जीवात्मा, कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य, सत्यासत्य आदि विविध विषयों को जानता है। इसके साथ ही उसे जीवात्मा के भीतर व बाहर विद्यमान सर्वव्यापक व जगत् के स्वामी ईश्वर का सहाय भी प्राप्त होता है, जिससे उस सफलता का मिलना सुनिश्चित होता है। ईश्वरोपासक मनुष्य स्वाध्याय आदि के द्वारा कर्म, फल, रहस्य को जानता है और दुःखों को अपने पूर्व अशुभ कर्मों का परिणाम अथवा आधिदैविक, आधिभौतिक तथा आध्यात्मिक दुःखों में से एक व मिश्रित दुःख मानकर उनको धैर्यपूर्वक सहन करता है क्योंकि वह जानता है कि दुःख स्थाई नहीं है। इनका कुछ अवधि बाद निराकरण व समाधान होना निश्चित होता है।

संसार में वेद के अतिरिक्त कोई ऐसा ग्रन्थ नहीं है जिसे हम मनुष्यों के लिए सत्य धर्म का प्रकाश करने वाला मार्गदर्शक ग्रन्थ कह सकें। सभी मतों में अविद्या व अन्य मतों की अच्छी की उपेक्षा करने के संकेत मिलते हैं। उन मतों में यह शिक्षा नहीं है कि सत्य कहीं से भी प्राप्त होता है तो उसे स्वीकार कर लेना चाहिये। सभी मत अपने ही मत को महत्व देते व दूसरे मत की उपेक्षा करते हैं। कोई मत यह स्वीकार नहीं करता कि उनके मत की तुलना में अन्य मतों में भी उनके समान व उनसे कुछ अच्छी बातें, मान्यतायें व सिद्धान्त हो सकते हैं। ऐसा न होने से सभी मत पक्षपात पर आधारित प्रतीत होते हैं। वैदिक मत संसार का सबसे प्राचीन मत है। सृष्टि के आरम्भ में ही वेदों का आविर्भाव परमात्मा ने मनुष्यों के कल्याण के लिये किया था। वेद पुस्तक या वेद ज्ञान का प्रयोजन किसी मत व सम्प्रदाय की अवहेलना करना कदापि नहीं था। वेद सम्पूर्ण ज्ञान है। वेद ज्ञान प्राप्त कर लेने पर किसी अन्य मत की पुस्तक का अध्यय कर उससे ज्ञान प्राप्त करने की आवश्यकता नहीं होती। परमात्मा पक्षपात रहित है और ऐसे ही उसका ज्ञान वेद है जो किसी से पक्षपात करने की शिक्षा नहीं देता। परमात्मा के लिये तो संसार के सभी गोरंग व श्याम वर्ण वाले, नाटे व लम्बे, सुन्दर व कुरुप सभी उसकी अपनी सन्तानें हैं। वह तो सबसे समान रुप से प्रेम करता है और सबके सुख के लिये

प्रयत्नशील रहता है। अतः एक सच्चे पक्षपातरहित तथा न्यायकारी पिता के समान परमात्मा का ज्ञान अर्थात् वेद का ज्ञान है। वेदों ने १.९६ अरब वर्षों से भी अधिक समय तक पूरे विश्व पर अपना प्रभाव बनाये रखा।

भारत में जब तक ऋषि परम्परा स्थापित रही, भारत सहित संसार के किसी देश में अविद्याजन्य मतों का आविर्भाव व प्रचार नहीं हुआ। ऋषि परम्परा विलुप्त होने पर वेदों का प्रचार बन्द होने से अविद्यायुक्त मत, मतान्तरों की उत्पत्ति व प्रचार देश,देशान्तर में हुआ है।

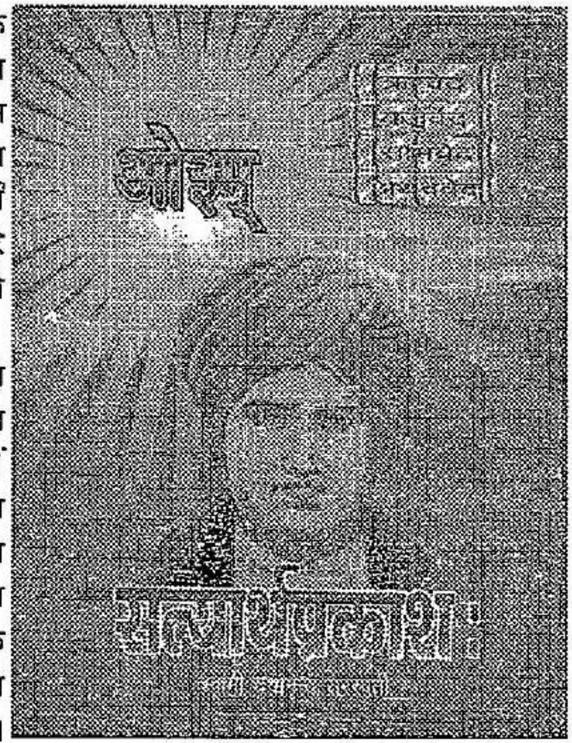

देश व विश्व का यह दुर्भाग्य ही कहा जायेगा कि ऋषि दयानन्द से पूर्व लगभग ५००० वर्ष के कालखण्ड में ऐसा कोई वेदज्ञान ऋषि उत्पन्न नहीं हुआ जो लोगों को सत्यासत्य, विद्या-अविद्या, उचित-अनुचित, कल्याण-अकल्याण युक्त ज्ञान व कर्मों के विषय में ज्ञान कराता है और असत्य, अज्ञान, अन्धविश्वासों व मिथ्या परम्पराओं को छोड़कर लोगों को देश व विश्व के कल्याण के काम में प्रवृत्त करता है। ऋषि दयानन्द को यह सौभाग्य ईश्वर व अपने गुरु विरजानन्द सरस्वती जी की प्रेरणा से प्राप्त हुआ और उन्होंने इस कार्य को करना स्वीकार किया था। इसी कारण हमें वेदों का परिचय व ज्ञान होने के साथ मत-मतान्तरों की अविद्या व अन्धविश्वासों सहित संसार में प्रचलित अनेकानेक मिथ्या व कुपरम्पराओं का ज्ञान हुआ।

ऋषि दयानन्द ने अपने जीवन काल में वैदिक ज्ञान को अपने मौखिक उपदेश, वार्तालापों तथा शास्त्रार्थ के माध्यम से प्रचारित किया। उनकी महत्वपूर्ण एक देन यह भी है कि उन्हों सभी वैदिक मान्यताओं सहित मत-मतान्तरों की अविद्या को अपने बाद के लोगों का मार्गदर्शन करने के लिये एक अद्भुत ग्रन्थ **सत्यार्थप्रकाश** प्रदान किया। ऋषि दयानन्द का यह उपकार हमें सबसे उत्तम व श्रेष्ठ उपकार लगता है। इस प्रकार के कारण हम व समस्त विश्व ऋषि दयानन्त की मृत्यु के १३५ वर्ष बाद भी लाभान्वित हो रहा है। यदि यह सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ न होता तो आज संसार में अविद्यु व असत्य मान्यताओं से युक्त मत-मतान्तरों का बोलबाला होता। मत-मतान्तरों का बोलबाला आज भी है परन्तु आज उन्हें **सत्यार्थप्रकाश** और आर्यसमाज का कुछ न कुछ डर सताता है। जैसे चोर पुलिस से डरता है वैसे ही अवैदिक मत-मतान्तर के लोग वेद, वैदिक शास्त्रों तथा ऋषि दयानन्द के सत्यार्थ प्रकाश एवं ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका से डरते व भयातुर रहते हैं। जिस प्रकार से अन्धकार में एक दीपक के जलने से अन्धेरा भाग जाता है उसी प्रकार वेदों का ज्ञान भी दीपक व सूर्य के समान है, जिसका प्रकाश होने से मत-मतान्तर रूपी अन्धकार नष्ट हो जाता है।

सत्यार्थप्रकाश १४ समुल्लासों में रचा गया ग्रन्थ हैं। इसके आरम्भ के दस समुल्लास पूर्वार्ध तथा बाद के चार समुल्लास उतरार्ध के कहलाते हैं। पूर्वार्ध के दस समुल्लासों में वैदिक सत्य मान्यताओं का युक्ति एवं तर्क पूर्व मण्डन किया गया है। सत्यार्थप्रकाश के उतरार्ध के चार समुल्लासों में भारतवर्षीय मत-मतान्तरों सहित अन्य देश-देशान्तरों में उत्पन्न अवैदिक मतों की अविद्यायुक्त, असत्य तथा मनुष्यों के लिये हानिकारक व अकल्याणकारी मान्यताओं का युक्ति व तर्क सहित खण्डन किया गया है। संसार में इससे पूर्व व इसके बाद ऐसा महत्वपूर्ण ग्रन्थ कहीं किसी ने नहीं लिखा। सत्य का मण्डन और असत्य का

खण्डन संसार में केवल वेदों व ऋषि दयानन्द का प्रतिनिधि आर्यसमाज ही करता है। सत्यार्थप्रकाश के प्रथम दस समुल्लासों में उद्बोधन प्राप्त होता है। संसार के सभी मतों को पढ़कर सत्यार्थप्रकाश का अध्ययन करने पर मनुष्य इसी निष्कर्ष पर पहुंचता है कि जो गुण व महत्व सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ का है वह अन्य किसी का नहीं है। सत्यार्थ प्रकाश वेदों का द्वार है। सत्यार्थप्रकाश से मनुष्य वेदों के महत्व से परिचित होता है और वेदाध्ययन में उसकी रुचि उत्पन्न होने सहित इन कार्यों को करने से आत्मा को सन्तुष्टि व प्रफुल्लता मिलती है।

वेद पढ़ने का सभी मनुष्यों का अधिकार है व ऐसा करना परम कर्त्तव्य एवं धर्म भी है। इसमें सभी महिलायें, क्षत्रिंय, वैश्य, शूद्र, अतिशूद्र, अज्ञानी, मूर्ख, पापी व अनुचित काम करने वाले मनुष्य भी सम्मिलित हैं। वेदों व सत्यार्थप्रकाश को पढ़कर एक दुराचारी सदाचारी बन सकता है, अज्ञानी ज्ञानी बन सकता है तथा समाज विरोधी समाज का सुधारक, हितकारी व संशोधक बन सकता है। सत्यार्थप्रकाश पढ़कर हमें अपने कर्त्तव्य व धर्म का ज्ञान होता है। सत्य को धारण करना ही मनुष्य का धर्म है। असत्य को छोड़ना व दूसरों से छुड़वाना भी मनुष्य का धर्म है। इसी कार्य को हमारे ऋषि मुनि व विद्वान् सृष्टि के आरम्भ से करते आये हैं और सृष्टि की प्रलय तक मनुष्य का यही कर्त्तव्य व धर्म निश्चित होता है।

सत्यार्थप्रकाश को पढ़कर ईश्वर व जीवात्मा का सत्यास्वरुप विदित होता है तथा ईश्वर उपासना की विधि, इसका महत्व तथा मनुष्य को अपने मोक्षगामी कर्त्तव्यों व साधनों का भी ज्ञान होता है।

पता :१९६, चुक्खूवाला-२, देहरादून-२४८००१

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा दुर्ग में वासन्ती नवसस्येष्टि यज्ञ एवं होली मिलन समारोह सम्पन्न

दुर्ग। शनिवार, दिनांक 07-3-2020 को सभा कार्यालय-दयानन्द परिसर आर्यनगर दुर्ग स्थित छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में आपसी भाईचारा सौहार्द्र एवं प्रेम के महापर्व के पावन अवसर पर **वासन्ती नवसस्येष्टि यज्ञ एवं होली मिलन समारोह** प्रातः 9 बजे से 12 बजे तक सोल्लासपूर्व वातावरण में सम्पन्न हुआ। वासन्ती नवसस्येष्टि यज्ञ डॉ. राजकुमार शास्त्री (भिलाई) के ब्रह्मत्व एवं आचार्य बलदेव राही के द्वारा सम्पन्न किया गया। मुख्य यजमान के रुप में सभा प्रधान- आचार्य अंशुदेव आर्य थे। तदोपरान्त समारोह में सभा आचार्य अंशुदेव आर्य सहित कार्यक्रम में उपस्थित पदाधिकारियों एवं सदस्यों का पुष्पहार द्वारा स्वागत किया गया, साथ ही उपस्थित समस्त आगन्तुकों का अष्टगंधक चंदन, गुलाल से तिलक लगाकर उनका सम्मान किया गया। इस अवसर पर सभा प्रधान आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा आशीर्वचन एवं वैदिक संगीतमय भजन का कार्यक्रम भी हुआ। होली मिलन समारोह में मुख्य रुप से सभा प्रधान-आचार्य अंशुदेव आर्य, सभा मंत्री-श्री दीनानाथ वर्मा, आचार्य बलदेव राही उपमंत्री (कार्यालय) एवं मुख्य अधिष्ठाता, डॉ. राजकुमार शास्त्री सेक्टर-६ भिलाई, केवलकृष्ण विज रायपुर, लक्ष्मण प्रसाद वर्मा रायपुर, डॉ. राववेन्द्र सिंह गुप्ता दुर्ग, श्री सुरेन्द्र कुमार गुप्ता नेहरूनगर, भिलाई, श्री पुरुषोत्तम प्रसाद वर्मा, उपप्राचार्य - महर्षि दयानन्द उ.मा. विद्यालय एवं समस्त स्टाफ, वैदिक गुरुकुल के ब्रह्मचारी, लोकनाथ आर्य, प्रबंधक-कृष्ण कुमार गुप्ता, प्रबंधक सभा बाड़ा लवन, ढाबा सहित सभा कार्यालय के समस्त कर्मचारीगण, पदाधिकारी एवं अंतरंग सदस्य, आर्यसमाज मठपारा के श्री विनोदबिरहारी सक्सेना सहित शताधिक आर्यजन उपस्थित थे। होला के प्रसाद वितरण एवं शांति पाठ के साथ होली मिलन समारोह का समापन हुआ। – *निजी संवाददाता*

नव वर्षाभिनन्दनम्

चैत्रे मासि जगद्ब्रह्म ससर्ज प्रथमेऽहनि।
शुक्लपक्षे समग्रन्तु तदा सूर्योदये सति॥

अर्थात् : चैत्र शुक्ल के प्रथम दिन सूर्योदय के समय ब्रह्म ने जगत् की रचना की।

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा

की ओर से

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा नवसम्वत्सर एवं

आर्यसमाज स्थापना दिवस

के पावन अवसर पर समस्त प्रदेशवासियों एवं प्रबुद्ध पाठकों को

हार्दिक शुभकामनाएँ।

प्रधान
आचार्य अंशुदेव आर्य

मंत्री
दीनानाथ वर्मा

कोषाध्यक्ष
चतुर्भुज कुमार आर्य

सर्वे भवन्तु सुखिनः सुहृदो मदीयाः,
सम्प्राप्य कीर्तिमतुलान्निजकर्मजाताम्।
स्वस्थाभवन्तु शुभकर्मफलानि लब्ध्वा,
लाभप्रदो भवतु वो नव वत्सरोऽयम्॥

शुभाकांक्षी
आचार्य कर्मवीर
सम्पादक, अग्निदूत

प्रदूषण युग में हवन ही परम धर्म है, क्योंकि

हवन से देवताओं की पूजा, उनके गुणों में वृद्धि तथा परस्पर सत्संगति होती है,
हवन से पृथ्वी, जल, वायु, और अन्न आदि के विकार दूर होते हैं,
हवन से पेड़ पौधे लगाने तथा पशुपालन की प्रेरणा मिलती है,
हवन से प्रकृति में भेषज्य (औषध) तत्वों को भरा जाता है,
हवन से दुःख, दारिद्रय और शोक सन्ताप दूर होता है,
हवन से पर्यावरण शुद्ध, पुष्ट एवं सुगन्धित होता है,
हवन से मनुष्य स्वस्थ और प्रसन्न होता है,
हवन से मानव-धर्म का परिपालन होता है,
हवन से सात्विकता का विस्तार होता है,
हवन से हमारा योगक्षेम सिद्ध होता है,
हवन से प्राणवायु की वृद्धि होती है,
हवन से रोगों का निवारण होता है,
हवन से वर्षा की वृद्धि होती है,
हवन से बुद्धि, परिष्कृत होती है,
हवन श्रेष्ठतम कर्म है,
हवन कामधेनु है,
हवन विष्णु है,

0-0

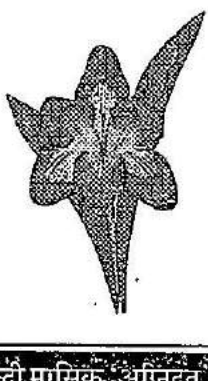

यज्ञो हि परमो धर्मः

हवनं प्रति गमनं Back to Home हवन की ओर चलें
Heal The Environment Pertorm Agnihotra

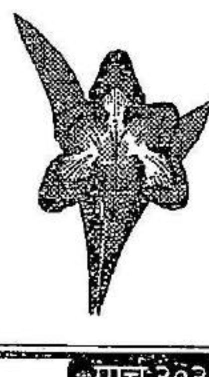

पर्व-प्रेरणा

हर्ष एवं उल्लास का पर्व : होली

- कृष्णचंद टवाणी

आनन्द और सुख-भोगों में पड़कर जीवन विलास-प्रिय और आलसी न बन जाए, यह होली का दिव्य संदेश है।

सांस्कृतिक होली : होली का सांस्कृतिक स्वरुप, पवित्रता और प्रेम का प्रतीक है। पवित्र जीवन की दृढ़-शिला पर उन्नति का भव्य भवन खड़ा होता है। पवित्रता का मेरुदण्ड सत्य है। महापुरुषों से अनुभव से छनकर एक निश्चित सिद्धान्त निकला है - **"सत्यमेव जयते नानृतम, सत्येन पन्था विततो देवयानः।"**

सत्य की सदा विजय होती है। असत्य की नहीं। सत्य दिव्य लोगों की प्राप्ति का मार्ग है। एक पुरानी कहावत है - सांच को आंच कहाँ ? होली अपनी सहस्रों से इस कहावत की प्रतिष्ठा करती है। प्रहलाद ने प्रेम और पवित्रता का नारा ऊंचा उठाया था। समता के व्यवहार से वह जन-जन का हृदय-सम्राट बन गया। सेवा की वेदी पर उसने अपना जीवन चढ़ा दिया और भक्ति तथा सत्य के मंगल मार्ग पर अग्रसर हुआ। साम्राज्यवादी हिरण्यकशिपु, अपने ही पुत्र की लोकप्रियता को न देख सका।

प्रहलाद के उदार और सम व्यवहार से उसे अपनी आसुरी नीति के अंत होने की आशंका हो गई। असाम्य, घृणा, अत्याचार और निरंकुशता के सन्मुख प्रहलाद सत्याग्रह करके खड़ा हो गया। हिरण्यकशिपु की दमन नीति प्रहलाद को विचलित न कर सकी। अंत में प्रहलाद को जला देने के लिए होलिका उसे गोदी में लेकर बैठ गई। सत्य की महिमा अपार है। होलिका अपनी ज्वालाओं में जल गई और प्रहलाद ज्यों का त्यों रहा - **"सत्यस्य नावः सुकृतमपीपरन्"** जनता के सेवकों को सत्य की नाव पर लगाती है।

आनन्द की बौछारें :- सत्य के साथ-साथ होली सुंदरता का भी संदेश देती है। सुंदरता का मूल-मंत्र प्रसन्नता है। मनुष्य को सच्चा मनुष्य बनने के लिए जितनी शिक्षा, ज्ञान और बुद्धि की आवश्यकता है, उससे कहीं अधिक आवश्यकता है प्रसन्नता की। प्रसन्नता ही जीवन है, वह सौभाग्यशाली है, जिसके मुख पर प्रसन्नता खेलती है। जीवन में सत् और चित्त का भाव रहता है परन्तु आनंद किसी ही भाग्यवान को प्राप्त होता है। आनन्द के मिलते ही जीव सच्चिदानन्दमय हो जाता है।

क्षुद्र और संकीर्ण जीवन में आनन्द नहीं रहता, निराशा, मलिन और उदास जीवन से मृत्यु का बल बढ़ता है। होली आनन्द की बौछारं से जीवन को तर कर देती है, सृष्टि के बीच में लाकर मनुष्य को उमंग और उत्साह से भर देती है। सार्वजनिक उत्सव से संगठित-शक्ति, प्रेम और सद्भावना का उपहार देती है।

जीवन का आदर्श :- जिसे चाह और चिंताओं से छुट्टी नहीं मिलती, वह सबसे बड़ा रोगी है। जिसके मन में धुन लग जाता है वहीं दुःखी है। आलसी, शिथिल, दीन, प्रगतिहीन और निस्तेज होकर जीना केवल सिसकते हुए सांस लेना है, उसमें जीवन नहीं होता। जीवन का दर्शन वहां होता है, जहां कर्म का बोझ मन और बुद्धि को नहीं झुका पाता। उमंग और उत्साह के हाथ-पैर नहीं टूटते, प्रसन्नता कुम्हलाती नहीं और आत्मा सदा हंसती खेलती रहती है।

प्रेम :- होली उत्सव में जितना स्थान प्रसन्नता को मिलता है, उससे अधिक प्रेम को दिया जाता है। अपनी ही प्रसन्नता नहीं, प्रेम और सद्भावना से सबकी प्रसन्नता होली का ध्येय है। भारतीय संस्कृति में **वसुधैव कुटुम्बकम्** की विराट कल्पना है। उदार पुरुषों के लिए सारा विश्व अपना ही परिवार है। संसार में सब अपने हैं, कोई दूसरा नहीं है। इस महाभाव का रचनात्मक रुप होली के उत्सव में देखा जाता है। प्रेमपूर्वक अपरिचित सबको हृदय से लगाकर सद्भावना सहित पुष्पमाला पहनाना, चंदन-गुलाल, अबीर

आदि मांगलिक चिन्ह लगाना-परस्पर प्रेम, मैत्री, मुदिता के द्योतक हैं। उन्नत राष्ट्रों में प्रेम और सद्‌भावना की सहस्रमुखी धाराएँ बहती है। प्रेम परमेश्वर का रुप है। प्रेम के बिना संसार सूना और नीरस है।

ऊँच-नीच के भेदभाव, राग-द्वेष, प्रान्तीयता और दलबन्दी को होली की पवित्र अग्नि में भस्म कर देने से दशों दिशाओं में प्रकाश, प्रेम और मंगल भर जाता है। कठोर और अश्लील शब्द बोलने, किसी का हृदय दुखाने और उन्मत होने में होली नहीं है। होली आती है- खेलने-कूदने और प्रसन्न होने के लिए हृदय के कोने-कोने का मैल धो डालने के लिए विश्व को शांति, प्रेम, मैत्री, करुणा और मुदिता के एक रंग में रंग देने के लिए। राष्ट्र के नव-निर्माण के लिए जिस प्रेम, सद्‌भावना, चरित्र, उत्साह, कर्मशीलता और प्रसन्नता की आवश्यकता है, उसे जुटा देने के लिए होली का उत्सव है।

आदर्श होली मनाएँ :- होली आनन्द और मनोरंजन का पर्व है इसे भारतीय संस्कृति के अनुरुप निम्न बातों को ध्यान में रखकर आदर्श होली के रुप में सभी को मिलजुलकर मनाना चाहिए।

- इस अवसर पर शराब, आतिशबाजी एवं डी.जे. म्युजिक आदि में व्यर्थ में खर्च होने वाली राशि का जरुरतमंदलोगों के लिए भोजन-नाश्ता आदि में खर्च कर मनाना चाहिए।
- चेहरे भले ही रंग बिरंगे हों लेकिन मन बदरंग न हो किसी को भी बदले की भावना से परेशान नहीं करें।
- विद्यालय इत्यादि में वाद-विवाद, चित्रकला, भाषण इत्यादि प्रतियोगिता आयोजित कर होली के त्यौहार में आयी विकृतियों के दुष्प्रभाव को समझावें।
- आंखों में गुलाल तथा बालों में सूखे रंग नहीं डाले।
- प्रेम और भाई चारे की भावना से मिलजुलकर आदर्श होली मनावें। एक दूसरे को प्रेम पूर्वक गुलाल, अबीर लगावें। लिलाट पर चंदन लगावें तथा रसायनिक रंगों, पेन्ट कीचड़ आदि का प्रयोग बिल्कुल न करें। इससे आपस में लड़ाई होती है तथा प्रेम के स्थान पर द्वेषता बढ़ती है।
- आजकल छतों से राहगीरों पर पानी भर गुब्बारे फैंकने का प्रचलन भी बढ़ रहा है इससे शरीर पर चोट आने की संभावना होती है अतः इस प्रथा का भी परित्याग करना चाहिए।
- इस अवसर पर भांग मिश्रित ठंडाई लोगों को जबरदस्ती नहीं पिलावें।
- कई व्यक्ति इस पर पर्व पर शराब आदि का सेवन कर अश्लील हरकतें भी करते हैं जो शोभनीय नहीं है। शिष्टाचार पूर्वक युवतियों से रंग व गुलाल से होली खेलना चाहिए। महिलाओं से अत्यधिक मजाक करते हुए उनके अंगों को स्पर्श करने का प्रयास नहीं करना चाहिए। अश्लील गीत सुनाकर एवं चित्र दिखाकर महिलाओं के साथ अभद्र व्यवहार नहीं करना चाहिए। इस त्यौहार पर फुहड़ता को त्यागकर धार्मिक भजन, रसिया आदि सुनाकर पवित्र एवं धार्मिक भावना से आदर्श होली मनाना चाहिए।

इस त्योहार के अवसर पर वर्तमान में दुष्कर्म, हत्यायें, गुण्डागर्दी, आगजनी, लूटमार, भद्दे अश्लील गीतों का गायन, कीचड़-पेंट लगाने की प्रथा आदि जो विकृतियां प्रचलित हो गई है उसे रोकना बहुत जरुरी है। समाज सुधारकों एवं संस्थाओं को इस अवसर पर उपर्युक्त बातों का ध्यान में रखने के लिए अधिकाधिक प्रचार करना चाहिए ताकि हम इस आनन्द के त्यौहार को उल्लास एवं हर्ष के साथ मनाकर भरपूर मनोरंजन कर सकें।

पता - प्रधान सम्पादक, अध्यात्म अमृत, सिटी रोड, मदनगंज, किशनगढ़ (राज.) ३०५८०१

: उपयोगी जानकारी :

हृदय की ब्लाक नसें (नली) खोलने का नुस्खा

१ ग्राम दाल चीनी, १० ग्राम काली मिर्च, १० ग्राम तेजपत्ता, १० ग्राम मगज (खरबूजे के बीज), १० ग्राम मिश्री, १० ग्राम अलसी और १० ग्राम अखरोट। इस कुल ६१ग्राम सामग्री को बारीक पीसकर रोज सुबह खाली पेट गुनगुने पानी से लें। इसके बाद एक घंटे कुछ भी पदार्थ न लें, चाय भी नहीं। *- मृदुल जोशी, सहारनपुर*

वैचारिक "वह भी सच्चा देशभक्त होता है"

- खुशहालचन्द्र आर्य

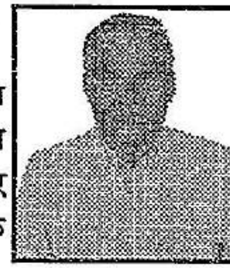

हम तो सच्चे देशभक्त उन्हीं को मानते हैं जो सैनिक बराबर देश की रक्षा करने के लिए सीमा पर तैनात रहते हैं और दुश्मन के आक्रमण का सामना करते हैं और जिनका पूरा जीवन देश की रक्षा में लगा हुआ है या जो व्यक्ति पुलिस में है और देश की जनता को चोरों, डाकुओं, लूटेरों, बदमाशों और पाकेटमारों से बचाते हैं और देश के अन्दर की स्थिति को सम्भाले रखते हैं। ये दोनों किस्म के व्यक्ति यदि पूरी ईमानदारी और कर्त्तव्य भाव से काम करते हैं तो देशभक्त हैं ही साथ ही वह किसान जो अपने कर्त्तव्य भाव से, देश का हित समझकर खेत में अधिक से अधिक परिश्रम करता है और अधिक से अधिक अन्न पैदा करके देश को भूखमरी से बचाता है और वह दुकानदार भी जो ईमानदारी व कर्त्तव्य भाव से दुकानदारी करता है। माल लेते व देते समय सही तोलकर देता और लेता है, उचित लाभ रखकर उचित मूल्य पर माल बेचता है, जो माल दिखाता है वही माल देता है ये दोनों किस्म के आदमी भी देशभक्त हैं। साथ ही वे अध्यापक जो अपने कर्त्तव्य व पूरी लगन से विद्यार्थियों को पढ़ाता है। इसी प्रकार वह डाक्टर जो मरीज से सही फीस लेकर, बिना भेदभाव के सही उपचार करता है, मरीज को कम से कम तकलीफ देने का ध्यान रखता है और उसको खुश रखने का प्रयत्न करता है और वह वकील जो ग्राहक से सही फीस लेकर, उसको बिना हैरान किये काम करता है और वह अधिकारी जो बिना रिश्वत लिए उचित फीस लेकर ग्राहक का कर्त्तव्य भाव से काम करता है और वह झाड़ू लगाने वाला मेहत्तर जो कर्त्तव्य भाव से समय पर आकर सही काम करता है। ये सभी किस्म के व्यक्ति भी एक सैनिक की भांति सच्चे देशभक्त हैं।

सीमा पर लड़ने वाले सैनिक तो युद्ध के समय ही अधिक काम करता है, बाकी समय में तो मौज-मस्ती ही करता रहता है। अच्छा खाता-पीता है। बाकी सब किस्म के लोग तो अपने पूरे जीवन भर सच्चाई व ईमानदारी से काम करते हुए अपना जीवन व्यतीत करते हैं। उनको तो नित्य अपनी ड्यूटी पर जाना पड़ता है और अधिक समय तक आराम भी नहीं करने पाता। इसलिए उसका कार्य और भी अधिक महत्त्वपूर्ण व सराहनीय है।

मैं जो लिखना चाहता हूं वह बात यह है कि जो व्यक्ति अपने शरीर पर कम से कम खर्च करता है, देश से कम से कम लेता है और अधिक से अधिक परिश्रम करके, देश को अधिक से अधिक देता है। ऐसा व्यक्ति चाहे वह साधारण जीवन जीने वाला हो, वह भी एक सच्चा देशभक्त है कारण वह देश से लेता कम और देता अधिक है, इसलिए वह अपने जीवन में देश की अनायास ही सेवा कर पाता है। जो व्यक्ति अपने जीवन पर साधारण दिनचर्या से देश को देता ही देता रहता है, वह व्यक्ति हमेशा किफायतशील व सन्तोषी भी होता है। उसको कभी भी अभाव नहीं सतायेगा। उसको अपनी आवश्यकता के अनुसार हमेशा हर वस्तु उपलब्ध रहेगी। जब उसको आवश्यकता की हर वस्तु उपलब्ध रहेगी तो वह चोरी, डकैती, ठगी, बेईमानी व धोखाधड़ी क्यों करेगा ? यदि विश्व में सभी व्यक्ति ऐसे हो जावें तो विश्व में सुख व शान्ति क्यों न बनी रहेगी ? जो व्यक्ति अपनी कमाई से अधिक खर्च करता है और अपनी आवश्यकताओं को अधिक से अधिक बढ़ाता रहता है और परिश्रम कम करके अय्याशी जीवन व्यतीत करता है, वह देश का सबसे बड़ा दुश्मन और देशद्रोही है कारण ऐसे व्यक्ति ही देश में अभाव पैदा करते हैं और देश को कर्जदार बनाते हैं। इसलिए भारत के प्रत्येक नागरिक को अपने शरीर के ऊपर कम से कम आवश्यकताएँ रखनीचाहिए और उसके अनुसार कम से कम खर्च करना चाहिए और अधिक से अधिक परिश्रम करते हुए अपना जीवनयापन करना चाहिए ताकि देश कभी भी अभावग्रस्त न हो और स्वयं का जीवन भी सुखमय हो। किसी को भी ऐसा काम

नहीं करना चाहि जिससे देश का अहित होता हो और दूसरों को दुःख व हानि होती हो। जैसे यदि कोई दुकानदार बेईमानी करता है या कम तोलता है तो उसमें ग्राहक का नुकसान तो होता ही है, उसको और भी काफी तकलीफ उठानी पड़ती है। यदि कोई डाक्टर अपना कर्त्तव्य ठीक नहीं निभाता और मरीज की खराब हालत देखकर उससे अधिक फीस लेता है और उसकी बीमारी को बढ़ाकर लम्बी रकम खेंचता है जिससे मरीज को हानि तो होती है, साथ ही परेशानी भी बढ़ती है। यह बात सभी जगह लागू होती है।

अब मैं अपने स्वयं के विषय में बताना चाहता हूं कि मैं अपने शरीर पर कम से कम खर्च करता हूं। साधारण कपड़े के जूते ३५० से ४०० तक के पहनता हूं। मध्यम कीमत की धोती व आधी का कुर्ता पहनता हूं। बनियान व कच्छे भी मध्यम कीमत के पहनता हूं। यात्रा अधिकतर यदि बहुत जरुरी न हो तो मैं सेकण्ड क्लास स्लीपर रिजर्व करवाकर जाता हूं। राजधानी, ए.सी., या फर्स्ट क्लास के डिब्बे में कभी नहीं जाना चाहता। यदि बहुत जरुरी काम हुआ तो बहुत कम समय के अन्दर जाना है तब प्लेन से जरुर-जरुर जाना पड़ता है। जहां तक होता है अपने रिश्तेदार या परिवार के घरों में ही ठहरता हूं। यदि कभी-कभी होटल में करना बहुत जरूरी होता है तो मध्यम रेट के होटल में ठहरता हूं। सोने की अंगूठी तथा चैन तो कभी भी पहनता नहीं हूं। सादा जीवन जीकर ही खुश रहता हूँ। स्वयं खुश रहना और दूसरों को खुश रखना, मेरे जीवन का अंग बन गया है। स्वास्थ्यवर्द्धक चीजें जैसे दूध, घी, लस्सी, फल, सब्जी का प्रयोग खाने में अधिक करता हूं। मांस, अण्डा, शराब, बीड़ी, सिगरेट तथा तम्बाकू की पुड़िया आदि खाना पीना तो जानता ही नहीं हूँ। एक-दो किलोमीटर चलने के लिए बस, ट्राम, टैक्सी, रिक्शा आदि न करके पैदल ही चलना पसन्द करता हूँ। ताश, चौपड़ न खेलकर पढ़ने लिखने का ध्यान अधिक रखता हूँ। इसीलिए मैंने अपने चालीस वर्ष के जीवन में ३५० से अधिक लेख व १२५ के अन्दाज में कविताएँ लिख चुका हूं जो आर्य जगत् की करीब सभी बड़ी-बड़ी पत्र-पत्रिकाओं में छपते रहते हैं। मैंने सभी लेखों व कविताओं का संग्रह करके एक बड़ा ग्रन्थ अन्दाज १२५० पन्नों का खुशहाल लेखावली के नाम से हमारे समाज के युवा पुरोहित आदरणीय आचार्य राहुलदेव शास्त्री के सम्पादन में छपवाया है, जिसमें मेरे ३२५ लेख, ७८ कविताएँ व ४३ आर्यजगत् के अधिकतर सन्यासियों, विद्वानों, उपदेशकों व भजनोपदेशकों तथा कुछ अपने परिवार और परिचित जनों की शुभकामनाएँ हैं। ये ५०० ग्रन्थ छपवाये थे जो मेरे परिचित सभी विद्वानों, संन्यासियों, उपदेशकों, पत्रकारों तथा आर्यजनों को दिये हैं जिसको मैं अपने जीवन की एक बड़ी उपलब्धि मानता हूं।

ऊपर लिखे अनुसार मैं अपने शरीर पर कम से कम खर्चच करता हूँ और अधिक से अधिक परिश्रम करते हुए देश व समाज के हित का अधिक ध्यान रखता हूं। गोरक्षा और गुरुकुलों की स्थापना को मैं देश उन्नति व समृद्धि का सही मार्ग मानता हूँ इसीलिए इन दोनों कार्यों के लिए मैं यथायोग्य सहयोग देता रहता हूँ। मैं गुरुकुल हरिपुर (उड़ीसा) से आठ वर्षों से संरक्षक के रुप में जुड़ा हुआ हूँ। वहां मैने इस अवधि में नौ कमरे साढ़े १३ लाख के जिसमें एक कमरा मेरा एक लाख का बाकी आठ कमरे दानदाताओं के, एक हॉल पांच लाख का एक दानदाता का और ११-१२ लाख रुपये नगदी गऊओं के लिए व बच्चों के लिए इस प्रकार अन्दाज तीस लाख रुपये अभी तक दे चुका हूँ जिसकों मैं अपनी एक उपलब्धि समझता हूँ। मैने निश्चय कर रखा है कि मैं कभी झूठ नहीं बोलूंगा, कभी किसी को धोखा नहीं दूंगा, समय की पाबन्दी का पूरा ध्यान रखूंगा, ईमानदारी से व्यापार करूंगा, सबसे अच्छा व्यवहार रखूंगा, आर्यसमाज बड़ाबाजार के रविवारीय सत्संग में यदि कोई मोटी अड़चन न आवे तो हर रविवार को सत्संग में अवश्य समय पर जाने का भरसक प्रयत्न करूंगा। ईश्वर इन सब बातों को पूरा करवा रहा है, आगे भी करवाता रहे, यही परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता हूँ।

पता : गोविन्दराम एण्ड संस, १८०, महात्मा गांधी रोड, (दो तल्ला), कोलकाता-७००००७

पुण्य स्मरण

जिनका ६ मार्च को बलिदान दिवस है :-

रक्तसाक्षी पं. लेखराम

– ले. मनुदेव 'अभय' विद्यावाचस्पति, एम.ए.

अपने लहू से लेखराम तेरी ------

सामान्यतः समाज में विभिन्न बौद्धिक स्तर के लोग होते हैं। वे लोग अपने-अपने स्तर पर सामाजिक मूल्यों का आकलन करते हैं। यह कथन बहुत श्रुत है कि मन्दिर के शिखर पर लहराती ध्वजा को देखकर उसे दूर से ही प्रणाम कर अनुष्ठान की पूर्ति की प्रार्थना करते हैं। केवल सूक्ष्म बुद्धि धारण करने वाले ही मन्दिर के नींव में लगे पत्थरों को या तो देखते हैं अथवा उनकी गणना करते हैं। तत्त्वतः समाज रूपी इस मन्दिर की नींव में अनेक ज्ञात-अज्ञात शूरवीरों के त्याग अथवा आत्मोत्सर्ग (बलिदान) की घटनाएँ छिपी होती है। कुछ बिरले लोग ही इन महापुरुषों के संवंध में जाने की जिज्ञासा रखते हैं। आज हम आपके सम्मुख एक ऐसे महान् विद्वान् और आत्म बलिदान का इति-वृत्त बताने जा रहे हैं, जिन्होंने इस विशाल हिन्दू समाज के नौनिहालों की धर्म-रक्षा के लिए अपने इकलौते प्रभु की प्राणों की रक्षा का ध्यान न रखते हुए अपना ध्येय सम्मुख रखा। इन विद्वान् और शूरवीर का नाम पं. लेखराम था।

इनका जन्म ८ चैत्र संवत १८१८ को ग्राम सेद्पुर जिला झेलम (पश्चिमी बंगाल) में पं. तारासिंह एवं श्रीमती भागभरी के पुत्र के रूप में हुआ था। सेद्पुर तथा पेशावर में इनकी प्राथमिक शिक्षा सम्पन्न हुई। १४ वर्ष की अल्पायु में आपने उर्दू, फारसी तथा अरबी का पर्याप्त ज्ञान प्राप्त कर लिया। इनके पिता तथा पितामह अंग्रेजों के पुलिस विभाग में पदाधिकारी थे। इस कारण १७ वर्ष की आयु में लेखराम पुलिस में भर्ती हो गये। ये २४ सितम्बर १८८१ ई. तक पुलिस की नौकरी छोड़कर मनुष्य की दासता छोड़कर मुक्त हो गये। संवत् १८५० में लक्ष्मी देवी नाम की कन्या से इनका विवाह हो गया। १८ मई १८९५ ई. में सुखदेव नाम के पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। इनमें स्वाभिमान कूट-कूट कर भरा हुआ था। एक विद्यालय में रखा पानी का घड़ा झूठा हो गया था, ये दिन भर स्कूल में प्यासे रहे, किन्तु झूठे घरे का पानी नहीं पिया। ब्राह्मण कुल में उत्पन्न होने के कारण लेखराम पवित्रता आदि पर बहुत ध्यान रखते थे।

पूर्व जन्मों के संस्कारों का पुनर्जागरण :-

भारतीय दर्शन के अनुसार पुनर्जन्म एक शाश्वत सत्य है और जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः यह एक ऋत है, अटल सिद्धान्त है। तद्नुसार सारस्वत ब्राह्मण कुल में उत्पन्न इस सेवक में धार्मिक जिज्ञासा बड़ी प्रबल थी। जिन दिनों ये पेशावर में सार्जन्ट पद पर नियुक्त थे, उन्हीं दिनों इन्हें मुंशी कन्हैयालाल अलखधारी के ग्रन्थों को पढ़ने का सुअवसर प्राप्त हुआ। इसका सुपरिणाम यह निकला कि लेखराम जी ने ऋषि दयानन्द लिखित अनेक ग्रन्थ डाक द्वारा बुलवा लिये और उन्हें ध्यानपूर्वक पढ़ा। इस स्वाध्याय, मनन, चिंतन तथा ब्राह्मोचित सुसंस्कारों के कारण उनके मन और बुद्धि पर पड़ा अज्ञानपूर्ण पौराणिक आवरण हट गया और वे उसके विशुद्ध आर्य बन गये। ऋषि के ग्रन्थों के पढ़ने से उनमें बुद्धि तथा तर्क का विकास हुआ और वे जिज्ञासा शांत करने का उपाय सोचने लगे। इसी तारतम्य में १७ मई १८८० संवत् १९३७ बैशाख में अजमेर गये और महर्षि दयानन्द से सीधे भेंट की।

ईश्वर अंश जीव अविनाशीः
एको ब्रह्म द्वितीयो नास्ति एक भ्रम

यद्यपि दयानन्द से साक्षात् दर्शन होने के पश्चात् उन्होंने अपनी जिज्ञासा भरे पहला यह प्रश्न पूछा -जीव ब्रह्म में भिन्नता का कोई वेद का प्रभाव बतलाइये ? जिसका शिष्य की भावना का आदर करते हुए ऋषि ने उत्तर दिया - यजुर्वेद का सम्पूर्ण ४०वाँ अध्याय में आपके प्रश्नों का उत्तर है। अर्थात् ईश्वर और जीव अलग-अलग सत्ताएं हैं। जीव ब्रह्म का अंश नहीं है। द्वितीय प्रश्न - क्या अन्य मतों

> **पं. लेखराम ने कहा था – आर्यसमाज को जीवित तथा जाग्रत रखने के लिए दो बातों का ध्यान रखना आवश्यक है। वे दो कार्य हैं – प्रथम तहरीर (लेखन कार्य) तथा तकरीर (शास्त्रार्थ) अर्थात् विद्वानों को अपने लेखन से वेदों के सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार सदैव करना। साथ ही, समाज में स्थित विभिन्न मत-मतान्तरों जिनमें मुसलमान और इसाई प्रमुख हैं, उनसे शास्त्रार्थ करने के लिए योग्य विद्वान तैयार करते रहना चाहिए।**

के अनुयायियों की शुद्धि करना शास्त्रीय अनुमोदन है? ऋषि उवाच - हाँ, शुद्धि अवश्य करना चाहिए और उसके गुण-कर्म-स्वभाव के अनुसार उसे समाज में उचित और सम्मानित स्थान देना चाहिए। आज इसकी बड़ी आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त भी उन्होंने अनेक प्रश्न पूछे और ऋषि दयानन्द ने इस पवित्र और जिज्ञासु आत्मा को शास्त्रो उत्तर दिये। इससे लेखराम जी का मन, बुद्धि और आत्मा पूर्णतः सन्तुष्ट हुई। अन्त में ऋषि दयानन्द ने युवा हृदय इस ब्राह्मण बालक को एक अन्तिम आदेश दिया – "२५ वर्ष की आयु से पूर्व विवाह न करना।" इसके पश्चात् गुरुवर को प्रणाम करके लौट आये। पं. लेखराम जी ने अपने गुरु के आदेशानुसार ३६ वर्ष की प्राप्ति के पश्चात् रुद्र ब्रह्मचारी के रूप में ही लक्ष्मी देवी से विवाह किया। तत्पश्चात् डेढ़ से दो वर्ष के उपरान्त उन्हें एक पुत्र रत्न प्राप्त हुआ और उन्होंने इसका नाम 'सुखदेव' रखा।

कड़ी टक्कर : कादियाण (जिला-गुरुदासपुर) का मिर्जा गुलाम अहमद उन दिनों आर्य समाज के बढ़ते प्रभाव से ईर्ष्या करता था। उसने बुराहीन-ए-अहमदिया लिखकर आर्यसमाज पर कटु प्रहार किया। आर्य मुसाफिर लेखराम ने इसके उत्तर में बुराहीन-ए-अहमदिया तकजीव लिखकर उसे मुंह तोड़ जवाब दिया। इसके बाद उसे फिर सुर्म-ए-चश्म आरिया लिखा जिसका उत्तर पं. लेखराम ने नुस्ख-ए-खब्त अहमदिया लिखकर इसकी बोलती बन्द कर दी। मिर्जा गुलाम अहमद अपने आपको खुदा का असली पैगम्बर घोषित कर समाज में अन्ध विश्वास फैलाता था। परन्तु पं. लेखराम की युक्तियों के सम्मुख उसके सारे चमत्कार असफल हो गए। इन सारे सवाल-जवाब से मुसलमानों में पं. लेखराम के विरुद्ध विषैला वातावरण तैयार हो गया। जैसा कि विदित है कि मुसलमान अपने विरोधियों को मार कर ही अपनी विजय समझते हैं। ठीक, इसी तरह उन्होंने पं. लेखराम की हत्या की योजना बना डाली।

पं. लेखराम अब उत्तर-पश्चिमी पंजाब में तूफान दौरे करने गये। अनेक स्थानों पर नब्बे मुसलमानों को शुद्ध कर उन्हें हिन्दू समाज की मुख्य धारा में मिलाने लगे। साथ ही, वे जहां अवसर तथा उचित स्थान पाते वहां आर्यसमाज की स्थापना करते। पेशावर में पं. लेखराम जी ने ही अपने साथियों के साथ प्रथम बार वहां आर्यसमाज की स्थापना की। वे अपनी प्रचार यात्रा में पत्नी लक्ष्मी तथा शिशु सुखदेव को भी साथ रखते थे। यात्राओं में होने वाली असुविधाओं तथा जलवायु परिवर्तन के कारण शिशु सुखदेव बीमार पड़ गया। उसका उपचार भी कराया गया, परन्तु अल्पायु में ही उसका निधन हो गया। कहते हैं, जिन दिनों उनका इकलौता पुत्र सुखदेव बहुत गंभीर हालत में बीमार था उन्हीं दिनों दूर के एक गांव में कुछ हिन्दुओं को मुसलमान बनने की खबर मिली। पंडित जी अपने बीमार पुत्र को छोड़कर बिना भोजन किए रेल द्वारा वहाँ पहुंच गये और उन हिन्दुओं को मुसलमान बनने से रोक दिया। इधर उनका इकलौता पुत्र सुखदेव संसार छोड़कर चला गया। पुत्र की मृत्यु का समाचार सुनकर उन्होंने जो उत्तर दिया, वह स्वर्णाक्षरों में अंकित करने योग्य है। उन्होंने अपना दाहिना हाथ उठाकर अत्यन्त आत्म विश्वास से कहा – **भारत माता के सैकड़ों लालों का विधर्मी होने से बचाने के कारण यदि एक लाल खो दिया तो क्या हुआ।** शेष पुत्र तो बच गये। यह था पं. लेखराम का जीवन-दर्शन, जिसे उन्होंने अपने गुरु महर्षि दयानन्द से उनके चरणों में बैठकर उनके मुखारविन्द से निकले शब्दों को आत्मसात करके सीखा था और चल पड़े अपनी डगर पर ... कारवाँ बनता गया।

महर्षि दयानन्द का प्रामाणिक जीवन-चरित्र

आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द की मृत्यु के पश्चात् तत्कालीन पंजाब आर्य प्रतिनिधि ने महर्षि दयानन्द का प्रामाणिक जीवन-चरित्र लिखने का दायित्व पं. लेखराम को सौंपा। माननीय पंडित जी ने अति कठोर परिश्रम कर उन सब स्थानों का दौरा किया जहां-जहां स्वामी जी ने पधारकर वैदिक धर्म का प्रचार तथा आर्यसमाजें स्थापित की थी। इनके द्वारा लिखा गया ऋषि का जीवन चरित्र वर्तमान में अनेक लेखकों को सन्दर्भ ग्रन्थ के रूपों में बहुत उपयोगी सिद्ध हो रहा है। उनका यह योगदान ऐतिहासिक दृष्टि से बड़ा महत्त्वपूर्ण है।

अपने लहू से लेखराम अपनी कहानी लिख गये

ईसाई तथा विशेषकर मुसलमानों से शास्त्रार्थ तथा शुद्धि के सुदर्शन चक्र के कारण अनेक मुसलमान उनकी जीवन लीला को समाप्त करने का षड़यंत्र रचने लग गये। एक दिन जब वे अपनी चारपाई पर बैठकर शुद्धि का बहाना बनाकर आये एक मुसलमान युवक को हिन्दू धर्म की विशेषताएँ समझा रहे थे, तभी कुछ काम से वे चारपाई छोड़कर नीचे खड़े होकर अंगड़ाई ले रहे थे, तभी अवसर पाकर उस कृतघ्न मुस्लिम युवक ने पंडित जी के पेट में तेज धार वाला छुरा भोंक दिया, जिससे उनके पेट से आतड़ियाँ बाहर गिर गई। यद्यपि अस्पताल में उन्हें बचाने का बहुत प्रयत्न किया गया, परन्तु सब असफल रहा। इस प्रकार पं. लेखराम फाल्गुन शुक्ल ३ संवत् १९५३ वि. को कर्त्तव्य रूढ़ रहते हुए इस नश्वर संसार को छोड़कर चले गए। परन्तु यश शरीर जब तक जीवित रहेगा, तब तक आर्यसमाज उनसे प्रेरणा लेता रहेगा। प्रसंग वश उनका एक प्रेरणा दायी उद्घोष सदैव स्मरण रखने योग्य है। उन्होंने आर्यसमाज को सन्देश दिया था :- "आर्यसमाज से तहरीर (लेखन कार्य) तथा तकरीर (शास्त्रार्थ) का कार्य कभी भी बन्द न होना चाहिए। इन पंक्तियों का लेखक पं. लेखराम से प्रेरणा प्राप्त कर अहर्निश सारस्वत यज्ञ के माध्यम से जीवन के ८वें दशक में भी लेखन कार्य कर रहा है। अन्त में महर्षि दयानन्द के इस सुयोग्य शिष्य पं. लेखराम को उनके इस बलिदान-दिवस पर हृदय से प्रणाम करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित है।

पता : सुकिरण अ/१३, सुदामा नगर, इन्दौर, ४५२००९ (म.प्र.)

मोहनलाल चड्ढा नहीं रहे

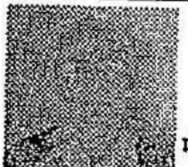

भिलाई। गत २९ फरवरी २०२० को श्री मोहनलाल चड्ढा म.प्र. आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व उपप्रधान, आर्यसमाज भिलाई के पूर्व प्रधान एवं भिलाई स्टील प्लांट के पूर्व असिस्टेन्ट मैनेजर का अप्रत्याशित देहावसान हो गया। १ मार्च २०२० को पं. जयदेव शास्त्री एवं आर्यसमाज भिलाई सेक्टर-६ के धर्माचार्य अंकित शास्त्री के पौरोहित्य में आमसेना गुरुकुल के आचार्यों के निर्देशन में पूर्ण वैदिक रीति से अन्त्येष्टि संस्कार भिलाई रामनगर स्थित मुक्तिधाम में सम्पन्न हुआ। भारी संख्या में श्रद्धाञ्जलि देने आर्यजन उपस्थित थे।

आप एक कविहृदय वैदिक धर्मी एवं निस्पृह परोपकार वृत्ति के सज्जन थे। आपका स्वाध्याय सैद्धान्तिक ग्रन्थों का बड़ा तगड़ा था। इन पंक्तियों के लेखक को यह बात ठीक तरह से याद है, जब ९०-९१ में सम्भवतः सेवानिवृत्त हो गए थे या नहीं यह तो स्पष्ट नहीं हो पा रहा, आप गुरुकुल आमसेना गर्मी छुट्टी से पहले दो-तीन दिनों के लिए आते थे और शास्त्री कक्षा के छात्रों को इतिहास पढ़ाया करते थे। अध्यापन काल में एक छात्र के रुप में आपके विस्तृत ऐतिहासिक ज्ञान के समक्ष हम नतमस्तक रहते थे। सन् सम्वत् के साथ तथ्यों को याद कराने की आपकी शैली विलक्षण थी, प्रतिदिन सायंकाल संध्योपरान्त ब्रह्मचारियों के बीच वैदिक धर्म के सिद्धान्तों को आप बड़े ही रोचक अन्दाज में प्रस्तुत करते थे। गुरुकुलीय शिक्षा समाप्ति के उपरान्त भी मेरा कार्यक्षेत्र छत्तीसगढ़ होने के कारण प्रायः वेदप्रचार प्रसंगों में अथवा से.६ भिलाई के साप्ताहिक सत्संगों में उत्सवों में मिलना हो जाता था, हमेशा मन्द मुस्कान के साथ प्रेरक संदेश दिया करते थे। उनके प्रयाण से छत्तीसगढ़ का आर्यजगत निश्चय ही अपना एक पितृ पुरुष व मार्गदर्शक खो दिया है, उनकी क्षति अपूरणीय है। छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा एवं अग्निदूत परिवार दिवंगत आत्मा की सद्गति एवं परिवार को असहनीय वेदना सहन करने के लिए प्रभु से प्रार्थना करती है। *- सम्पादक*

आर्यसमाज क्या? क्यों ? कैसे ?

रचयिता : रोहित आर्य
आर्यसमाज मिंटो रोड, डीडीयू
मार्ग, बीजेपी आफिस के
सामने, नई दिल्ली-02

आर्यसमाजी नाम को सुनकर, पाखण्डी थर्राते है,
नजर नहीं फिर आते हैं, ईश्वर के गुण गाते है ।
ढोंग और आडम्बर छिपकर, अपनी जान बचाते हैं,
नजर नहीं फिर आते हैं, ईश्वर के गुण गाते है ॥०॥

आर्यसमाज है नाम जगत को, सच्चा पथ दिखलाने का,
वेदों की प्राचीन पद्धति, को सबको सिखलाने का ।
ईश्वर की पावन वाणी, हर मानव तक पहुँचाते हैं ॥१॥
नजर नहीं फिर आते हैं ...
भूत-प्रेम, ग्रह-उपग्रहों की, चाल नहीं फिर चलती है,
गुरु-घण्टालो, पीर और मुल्लों की दाल न गलती है ।
सुनकर इसका नाम सिर्फ, सब भूत-प्रेम उड़ जाते हैं ॥२॥
नजर नहीं फिर आते हैं...
बिल्ली अगर रास्ता काटे, फर्क नहीं फिर पड़ता है,
दयानन्द के चेलों को न, फिर पाखण्ड जकड़ता है ।
शनि और राहू-केतू भी, उल्टे लटके जाते हैं ॥३॥
नजर नहीं फिर आते हैं ...
अपने जीवन को जीने का, सबको है अधिकार यहां,
हर एक प्राणी ईश पुत्र है, करो सभी से प्यार यहां ।
जीव मात्र की रक्षा के हित, दयाभाव अपनाते हैं ॥४॥
नजर नहीं फिर आते हैं...

माता-पिता गुरु आचार्यों की, सेवा यही सिखाता है,
धरती पर ही स्वर्ग मिलेगा, सबको राह दिखाता है ।
सच्चे ईश्वर को पाने का, सच्चा पथ दिखलाते हैं ॥५॥
नजर नहीं फिर आते हैं ...
राष्ट्रभक्ति और स्वाभिमान के, भाव जाग्रत करता है,
देशद्रोह की कुटिल भावना, को पल में मृत करता है ।
पढ़ सत्यार्थ प्रकाश स्वयं ही, राष्ट्रभक्त बन जाते हैं ॥६॥
नजर नहीं फिर आते हैं...
हर मनुष्य पावन वेदों को, पढ़ सकता, सुन सकता है,
स्त्री, शूद्र, ब्राह्मण, क्षत्रिय, हर कोई गुन सकता है ।
पहनाकर उपवीत सभी को, पावन आर्य बनाते हैं ॥७॥
नजर नहीं फिर आते हैं ...
ऋषिवर दयानन्द से, हम सबने यह शक्ति पाई है,
देश-धर्म के विरोधियों को, नानी याद दिलाई है ।
यज्ञों को करके धरती को, **"रोहित"** स्वर्ग बनाते हैं ॥८॥
नजर नहीं फिर आते हैं...

स्मृति की रेखाएँ

रम्याणि वीक्ष्य मधुरांश्च निशम्य शब्दान्, पर्युत्सुकी भवति यत् सुखिनोऽपि जन्तुः ।
तच्चेतसा स्मरति नूनमबोधपूर्वं, भाव स्थिराणि जननान्तरसौहृदानि ॥

भावार्थ : कभी-कभी किसी सुन्दर दृश्य किन्हीं मधुर ध्वनियों, शब्दों को सुनकर सर्वसुखसम्पन्न व्यक्ति का भी अन्तःकरण द्रवित हो उठता है, इस अपनेपन को क्या कहा जावे ? अपरिचित के प्रति ऐसा स्नेह, इतनी करुणा दयार्द्रभाव कैसा ? कुछ समझ में नहीं आता । जिससे एक क्षण का भी परिचय नहीं परन्तु ऐसा लगने लगता है कि वह जन्मजन्मान्तर का आपका स्नेही हो । कारण क्या है, इसमें । ऐसा प्रतीत होता है - कि मनुष्य की स्मृति में पूर्वजन्म की जो प्रेमानुभूतियाँ निश्चेष्ट होकर पड़ी हुई थीं वे प्रबुद्ध होकर सचेतन मन से टकरा जाती हैं । निश्चय ही पूर्वजन्म के संस्कार प्राणी को कभी-कभी यकायक उद्वेलित करते है ।(हिन्दी के जनप्रिय सुप्रसिद्ध कवि श्री शिवमङ्गलसिंह सुमन की एक कविता इस सम्बन्ध में बहुत मार्मिक है) मैं तो तुम्हें पहचानता हूं । तुम न मानो जग न माने मैं तो तुम्हें पहचानता हूँ । - सुभाषित सौरभ

२३ मार्च
बलिदान
दिवस

२३ मार्च
बलिदान
दिवस

मातृभूमि को दिलाने मुक्ति जो कमाया नाम
बलिदानी शौर्य की कमाई को नमन है,
वरमाल की बजाय फांसी को गले में डाला
आजादी के युद्ध के जमाई को नमन है,
जिसने अमर क्रान्ति ज्वाल को जन्म दिया
पुण्य कोख वाली ऐसी माई को नमन है,
इंकलाब जिन्दाबाद वाले घोष को नमन
भगत की क्रान्ति-तरुणाई को नमन है।

जिनके लहू ने रचा क्रान्ति वाला इतिहास
जलियांवाले बाग के वीरों को नमन है,
शान्ति औ अहिंसा के विचारों को नमन है,
आजादी की डोली के कहारों को नमन और
लाला जी की पीठ के प्रहारों को नमन है,
तुम मुझे खून दो औ मैं तुम्हे आजादी दूंगा
दिल्ली चलो वाली ललकारों को नमन है।

हमको उजाला देते-देते जो बुझे हैं, उन
दीपकों की पावन कतारों को नमन है,
मातृ-वंदना के गीत-गाते चूम लिए
उन फांसी वाले पुण्य हारों को नमन है,
बलिदानी स्वरों की पुकारों को नमन मेरा
कोल्हुओं से बही तेल धारों को नमन है
क्रांतिकारियों ने जहाँलिखा वन्दे मातरम्
सेल्यूलर जेल की दीवारों को नमन है।

- गजेन्द्र सिंह सोलंकी

नवसंवत् हो मंगलकारी

नव संवत् हो मंगलकारी, जन जन में आये सद्‌बुद्धि।
परहित के भावों की मन में, सहसा हो अभिवृद्धि ॥

मंगलमय हो नव संवत्सर, मंगलमय हो घर आंगन।
मंगलमय हो इस धरती का, सत्य-शिव-सुन्दर कण कण ॥

आज हमारे अन्तस्थल में प्रेम भाव हो पुनः प्रदीप्त।
करुणा क्षमा सहिष्णुता से, अर्न्तमन हो फिर उदीप्त ॥

भाव शत्रुता के मिट जाये, उर में जागे मित्र भावना।
पूर्ण सदा हो मानव मन की इच्छा के अनुकूल कामना ॥

राम कृष्ण की, दयानन्द की परम्परा हो फिर जीवित।
करें परस्पर स्वच्छ हृदय से, एक दूसरे का हम हित ॥

मिटे नये इस संवत्सर में, फैला जो अन्याय अनय।
सभी दिशायें हो मंगलमय, जन जन हो वसुधा पर निर्भय ॥

मानवता के मंगलकारी पथ पर ही अब बढ़े चरण।
सच्चरित्रता का ही हम सब, जीवन पथ पर करें वरण ॥

भ्रष्टाचार मिटे, जिसने है किया राष्ट्र को अब अक्रान्त।
जागृति का नवमंत्र मिले अब, जागे मानव मन उद्‌भ्रान्त ॥

रुदन मिटे इस वसुन्धरा का छा जाये कुल हर्षोल्लास।
स्वार्थवाद को दे तिलाञ्जलि, जगे धरा पर नूतन आश ॥

मानवता की जय का डंका बजे पुनः भूमंडल पर।
जन जन हित की मंगलकारी, आया यह नववर्ष संवत्सर ॥

प्रणेता
स्व. राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति
मुसाफिर खाना, सुल्तानपुर (उ.प्र.)

आरोग्य जगत

होमियोपैथी से "स्वाइन फ्लू" का उपचार

- डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी

(होमियोपैथिक चिकित्सक)

मोबा. : ९८२६५११९८३, ९४२५५१५३३६

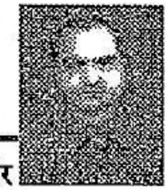

स्वाइन-फ्लू एक वाइरस के द्वारा होने वाला संक्रमण है। यह स्पर्श द्वारा बहुत ही तेजी से फैलने वाला संक्रमण है और यह एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्तिं में तेजी से फैलती है। स्वाइन-फ्लू का वायरस सुअर से मनुष्य में आया है और अब यह एक मनुष्य से दसरे मनुष्य में तेजी से फैल रहा है। इसे एच-१, एन-१ फ्लू, पिग फ्लू, होग फ्लू, स्वाइन-इन्फ्लुएन्ज़ा भी कहते हैं। सबसे पहले स्वाइन-फ्लू का अप्रैल २००९ में युनाईटेड स्टेट में पता चला था।

<u>लक्षण :-</u> स्वाइन-फ्लू के लक्षण सामान्य फ्लू के सामान ही होते हैं जैसे - (१) बुखार (२) खांसी (३) गले में दर्द (४) नाक से पानी बहना (५) शरीर में दर्द होना (६) ठण्ड लगना (७) सिरदर्द होना (८) थकान महसूस होना (९) भूख नहीं लगना (१०) कुछ लोगों को दस्त और उल्टी भी हो सकती है।

<u>इसके अलावा भी कुछ और लक्षण हो सकते हैं जैसे - बच्चों में</u> (१) सांस लेने में तकलीफ (२) उल्टी होना (३) बुखार के साथ रेशेज होना। बड़ों में : (१) सांस लेने में तकलीफ (२) सीने या पेट में दबाव (३) थकान (४) कमजोरी।

<u>कैसे फैलता है स्वाइन-फ्लू :-</u> स्वाइन-फ्लू एक सामान्य फ्लू की तरह ही फैलता है जैसे - (१) संक्रमित व्यक्ति की खांसी या छींक से। (२) स्वाइन-फ्लू से संक्रमित व्यक्ति की चीजों को छूने से।

किसको ज्यादा खतरा है एच-१ एन १ से :- (१) गर्भवती महिलाओं को (२) एक साल से कम उम्र के बच्चों को (३) ६५ से अधिक उम्र के लोगों को (४) हार्ट के रोगी को (५) एचआईवी से पीड़ित व्यक्ति को (६) बहुत लम्बे समय से किसी रोग से पीड़ित व्यक्ति को जिसका इम्यून सिस्टम कमजोर हो गया हो (७) हास्पिटल में काम करने वाले डाक्टर, नर्स और अन्य कर्मचारी।

कैसे बचें स्वाइन-फ्लू से :- (१) खांसते या छींकते समय नाक व मुंह पर टिशू-पेपर रखें और बाद में ठीक से कचरा पेटी में डालें। (२) खांसने या छींकने के बाद हाथ साबुन से धोएं। (३) संक्रमित व्यक्ति को छूने के बाद अपने आँख, मुंह और नाक को न छुएँ क्योंकि इनसे संक्रमण जल्दी फैलता है। (४) स्वाइन-फ्लू से संक्रमित व्यक्ति से दूरी बना कर रखें। (५) अगर आप स्वाइन-फ्लू से संक्रमित हैं तो स्कूल या आफिस न जाकर घर पर ही रहें।

स्वाइन फ्लू के लक्षण :-

(१) होम्योपैथी में रोग के नाम से कोई दवा नहीं होती है, रोगी के लक्षण के अनुसार दवाइयां दी जा सकती है। मांस खाने के कारण होने वाले रोग, सांस लेने में तकलीफ, नाक से पतला पानी जैसा बहे, आंखों में जलन हो, तेज ज्वर के साथ बेचैनी, कमजोरी लगे, बुखार कभी ठीक हो जाता है। कभी फिर से हो जाता है। बहुत तेज प्यास लगती है।

(२) अचानक से और तीव्र गति से होने वाला बुखार, जिसमें बहुत ज्यादा शारीरिक व मानसिक बेचैनी होती है। बहुत ज्यादा छींके आना, आंखे लाल सूजी हुई, गले में दर्द व जलन।

(३) सारे शरीर में दर्द रहता है। रोगी नींद जैसी हालत में पड़ा रहता है, सिरदर्द, खांसी, जुकाम, आंखों में दर्द, सिर के पिछले भाग में दर्द, सिरदर्द के साथ गर्दन व कंधे में दर्द, छींके, गले में निगलने में दर्द, बुखार में बहुत जाता कांपता है, प्यास बिलकुल नहीं लगती, चक्कर आते हैं।

(४) प्यास बहुत ज्यादा लगती है, सारे शरीर के मसल्स में दर्द जो कि हिलने-डुलने से बढ़ता है और आराम करने से ठीक होता है। सिर दर्द के साथ पसलियों में

दर्द, सूखी खांसी, उल्टी के साथ छाती में दर्द, चिड़चिड़ा होता है, गले में दर्द होता है, बलगम रक्त के रंग का होता है।

(५) धीमा बुखार, मसल्स में बहुत ज्यादा दर्द, सांस, पेशाब, पसीना आदि सभी स्राव से बहुत ज्यादा दुर्गन्ध आती है। महामारी के रुप में फैलने वाला इन्फ्लुएन्जा। लगता है कि शरीर टूट गया है, बड़बड़ाता है, बात करते-करते सो जाता है, मुंह में कड़वा स्वाद, गले में खराश, दम घुट जाने जैसा लगे, कमजोरी बहुत ज्यादा लगे।

(६) सर्दी जुकाम, चक्कर बहुत ज्यादा छींके, नींद नहीं आती है, आंखे लाल व जलन करती है, नाक से पतला बहता पानी, सर्दी के कारण सुनने में तकलीफ, गले में बहुत ज्यादा दर्द, गरम चीजें खाने-पीने से आराम, सूखी खांसी।

(७) नाक से तीखा स्राव, माथे में दर्द, आंखे बहुत ज्यादा लाल व पानी गिरता है, पलकों में जलन, कान में दर्द, छींके, नाक से बहुत ज्यादा पानी आता है, गले में दर्द, जोड़ों में दर्द होता है।

(८) इन्फ्लुएन्जा के सात सारे मसल्स व हड्डियों में दर्द, छींके, गले व छाती में दर्द, बलगमयुक्त खांसी।

नोट :- होम्योपैथी में रोग के कारण को दूर करके रोगी को ठीक किया जाता है। प्रत्येक रोगी की दवा उसकी शारीरिक और मानसिक अवस्था के अनुसार अलग-अलग होती है। अतः बिना चिकित्सकीय परामर्श यहां दी हुई किसी भी दवा का उपयोग नहीं करना चाहिए।

प्रमुख औषधियां :- आर्सेनिक अल्बा, ब्रायोनिया, फेरमफास, युपटोरियं, बेलाडोना, एकोनाइट, नक्स वोम आदि दवाईयां होमियो चिकित्सक के सलाह से लेकर रोग पर नियन्त्रण व सफलता पायी जा सकती है। रोगी को धैयता के साथ रोग का सामना करना चाहिए घबराना नहीं चाहिए।

नोट :- होम्योपैथी की प्रतिरोधक औषधियां लेने से रोगों के गंभीर आक्रमण से बचा जा सकता है।

पता : त्रिवेदी होमियो औषधालय, टाटीबन्ध, रायपुर ४९२००१ (छ.ग.)

महाप्रयाण- आर्यसमाज के हनुमान का

*विगत दिनों दयानन्द ब्रह्म महाविद्यालय हिसार के यशस्वी स्नातक आर्यसमाज में हनुमान एवं नारदमुनि जैसे सम्मानास्पद उपाधि को धारण करने वाले **आचार्य नन्दकिशोर जी** का संक्षिप्त बीमारी के उपरान्त महाप्रयाण हो गया। वे परिव्राजक थे, श्वेत वस्त्रों में संन्यासी थे। पूरा आर्यजगत् उन्हें आदर देता था। अनेक ग्रन्थों का प्रणयन गौरव ग्रंथमाला के नाम पर किया। देश के पचासों गुरुकुलों में सैकड़ों गरीब बच्चों को पढ़ाकर उनके जीवन गढ़े। डॉ. सत्यकेतु विद्यालंकार जी आर्यसमाज के सात भागों का विशाल इतिहास लिखने में तभी समर्थ हो पाए थे, जब इस नारद मुनि ने देश विदेश में घूम-घूम कर आर्यों एवं संस्थाओं के विवरण जुटाए थे। आर्यसमाज का कोई भी प्रान्तीय महोत्सव उनकी गरिमामयी उपस्थिति के बिना कभी सम्पन्न नहीं हुई, सारी सीमाएँ पारकर आर्यों में जोश भरने हनुमान जी अवश्य पधारते थे। वे चलते-फिरते आर्यसमाज थे। खुद सहयोग मांगते और दूसरों को सहयोग करते ऐसे विलक्षण व्यक्तित्व के धनी थे। उनका असमयिक प्रयाण आर्यजगत् के लिए अपूरणीय क्षति है। प्रभु उन्हें शान्दि दे। - **सम्पादक***

समाचार प्रवाह

माघी पुन्नी मेला राजिम में ऋषि बोधोत्सव, विश्व कल्याण महायज्ञ एवं वेदप्रचार कार्यक्रम सम्पन्न

राजिम। दिनांक १६ फरवरी २०२० को वैदिक गुरुकुल टाटीबन्ध के वेदपाठी बटुक के साथ आचार्य बलदेव राही उपमंत्री (कार्या.) एवं मुख्य भू-सम्पत्ति अधिष्ठाता, वेदाचार्य श्री राजबहादुर एवं आचार्य संजय शास्त्री के टीम द्वारा प्रातः ८ बजे १० बजे तक विश्व कल्याण महायज्ञ दोपहर १ बजे से सायं ४ बजे तक संगीतमय भजन व प्रवचन व सायं ४ से ६ बजे तक विश्व कल्याण महायज्ञ सायं ६ बजे से रात्रि ८ बजे तक संगीतमय भजन व प्रवचन, यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य अंशुदेव आर्य सभा प्रधान द्वारा आचार्य संजय शास्त्री के सहयोग से सम्पन्न हुआ। रायगढ़ से पधारे हुए वैदिक आर्केस्ट्रा के सहयोग से सुमधुर भजन की प्रस्तुति आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा किया गया। इस अवसर पर सभा मंत्री श्री दीनानाथ वर्मा, सभा कोषाध्यक्ष श्री चतुर्भुज कुमार आर्य विशेष रुप से यज्ञ स्थल पर उपस्थित हुए।

दिनांक १७ फरवरी २०२० को महर्षि दयानन्द आर्य उ.मा. विद्यालय टाटीबन्ध रायपुर के कक्षा ९वीं एवं १०वीं के लगभग ५० छात्र-छात्राएँ विश्व कल्याण महायज्ञ स्थल पर पहुंचे। पं. ऋषिराज आर्य द्वारा संगीतमय वैदिक भजन व प्रवचन का कार्यक्रम हुआ, सभा के प्रचारक श्री रामनाथ आर्य सहित लगभग १६ आर्यजनों का समूह यज्ञ स्थल उपस्थित होकर विश्व कल्याण महायज्ञ को सफल में बनाने में विशेष सहयोग प्रदान कर रहे हैं।

दिनांक १८ से २० फरवरी २०२० तक प्रातः ८ बजे से ११ बजे तक विश्व कल्याण महायज्ञ हुआ। सुबह ११ बजे से १ बजे तक पं. ऋषिराज आर्य द्वारा संगीतमय वैदिक भजन व प्रवचन का कार्यक्रम निरन्तर हुआ, तत्पश्चात् संगीतमय भजन व प्रवचन व सायं ४ से ६ बजे तक विश्व कल्याण महायज्ञ सायं ६ बजे से रात्रि ८ बजे तक संगीतमय भजन व प्रवचन यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य अंशुदेव आर्य सभा प्रधान द्वारा जिसमें आचार्य बलदेव राही उपमंत्री (कार्या.) एवं मुख्य भू-सम्पत्ति अधिष्ठाता, आचार्य राजबहादुर आर्य, संजय शास्त्री सहित अन्य कार्यकर्तागण उपस्थित रहे। उसी दिन प्रथम सत्र में महर्षि दयानन्द आर्य उ.मा. विद्यालय टाटीबन्ध रायपुर के कक्षा ११वीं के लगभग ३० छात्र-छात्राएँ के साथ में स्टाफ में जिसमें मुख्य रुप से प्राचार्य विनोद सिंह एवं उपप्राचार्य श्री पुरुषोत्तम वर्मा की टीम विश्व कल्याण महायज्ञ स्थल पर पहुंचे साथ ही सभा के कर्मचारीगण सहित अन्य गणमान्य आर्यजन यज्ञ स्थल पर उपस्थित रहे। यज्ञ स्थल विद्यालय के छात्राओं द्वारा रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं वेदपाठी बटुकों द्वारा सूर्य नमस्कार का संगीतमय व्यायाम प्रदर्शन भी सम्पन्न हुआ। सभा प्रधान जी एवं पं. ऋषिराज आर्य द्वारा छात्राओं एवं वेदपाठी बटुकों को प्रोत्साहन राशि प्रदान कर उनका उत्साहवर्धन किया।

दिनांक २१ फरवरी २०२० को ऋषि बोधोत्सव व महाशिवरात्रि पर्व के अवसर विश्व कल्याण महायज्ञ की पूर्णाहुति हुई। तत्पश्चात् सभा प्रधान आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा संगीतमय भजन व उपदेश हुआ, उन्होने ऋषि बोधोत्सव पर सारगर्भित उपदेश प्रदान किए। इस अवसर पर मंत्री श्री दीनानाथ वर्मा, आचार्य बलदेव राही उपमंत्री (कार्या.) एवं मुख्य भू-सम्पत्ति अधिष्ठाता, छत्तीसगढ़ स्थित कई आर्यसमाजों के पदाधिकारीगण व अन्य कार्यकर्ता गण एवं सभा बाड़ा कूरा, लवन एवं ढाबा के प्रबंधक सहित आसपास के गणमान्य श्रद्धालुगण भारी संख्या में उपस्थित रह कर कार्यक्रम को सफल बनाया। **-निजी संवाददाता**

*संसार में प्रमुख सुख सात माने गये हैं। **पहला सुख** नियोगी काया होना, **दूसरा सुख** पर्याप्त आय होना, **तीसरा सुख** मधुरभाषिणी पतिव्रता पत्नी, **चौथा सुख** आज्ञाकारी बुद्धिमान पुत्र, **पांचवा सुख** अच्छी विद्या का ज्ञान होना, **छठा सुख** अच्छा आवास और **सातवां** सुख अच्छे लोगों के साथ मिलना - ये सातों सुख शुभ कार्य करने वाले भाग्यशाली को ही उपलब्ध होते हैं इसलिए परोपकार और शुभ कर्म करना चाहिए।*

भावभीनी श्रद्धाञ्जलि

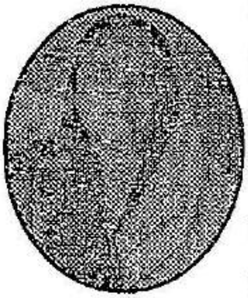

कुनमेरा (सरगुजा)। दिनांक १२ फरवरी २०२० दिन बुधवार को आचार्य बलदेव राही (सभा उपमंत्री कार्यालय एवं मुख्य अधिष्ठाता) की नानी ग्राम कुनमेरा, जिला-सरगुजा निवासी मृदुल भाषी, मिलनसार पूज्यनीया श्रीमती केतकी बाई उम्र ७५ वर्ष का निधन हो गया। वे अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़ गई। उनका अन्त्येष्टि संस्कार वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ, जिसमें पूरे परिवार सहित आसपास के ग्रामीणजन उपस्थित थे। छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा एवं अग्निदूत परिवार भावभीनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करती है। - *निजी संवाददाता*

जालियाँवाला बाग काण्ड का अकेला जीवित प्रत्यक्षदर्शी- पं. सुधाकर चतुर्वेदी का निधन

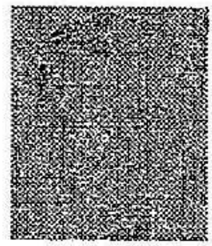

बैंगलुरु। वरिष्ठ स्वतन्त्रता सेनानी, महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनन्य भक्त, स्वामी श्रद्धानन्द जी एवं स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी के वयोवृद्ध ज्ञानवृद्ध शिष्य पं. सुधाकर चतुर्वेदी जन्म सन् १८९७, का १२३ वर्ष की आयु में बुधवार दिनांक २६ फरवरी २०२० को देर रात बैंगलुरु में निधन हो गया। गुरुवार शाम अंतिम संस्कार किया गया। उन्हें सन् १९१९ के जालियाँवाला बाग काण्ड का अकेला जीवित प्रत्यक्षदर्शी माना जाता था। प्राध्यापक राजेन्द्र जिज्ञासु अबोहर वाले के अध्यक्षता में उनका अब तक का सबसे बड़ा सम्मान समारोह सम्पन्न हुआ था।

अग्निदूत के ग्राहक सदस्यों की सेवा में

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मासिक मुख पत्र 'अग्निदूत' के समस्त ग्राहक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क १००/- यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें, जिससे कि उन्हें नियमित रूप से 'अग्निदूत' भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हो, उनसे निवेदन है कि वे अपना दसवर्षीय शुल्क ८००/- रु. भेजें। इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें। अन्यथा इस मास से अग्निदूत भेजना बंद कर दिया जायेगा। पत्र व्यवहार में अपना सदस्य संख्या तथा पूरा पता पिन कोड सहित अवश्य लिखें। **छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का भारतीय स्टेट बैंक दुर्ग शाखा में सेविंग एकाऊन्ट नं. : 32914130515, आई.एफ.एस.सी. SBIN0009075 कोड नं. अथवा देना बैंक दुर्ग शाखा में सेविंग एकाऊन्ट नं. 107810002857 आई.एफ.एस.सी. BKDN0821078 है, जिसमें आप किसी भी भारतीय स्टेट बैंक/देना बैंक की शाखा से आनलाईन शुल्क जमा कर सभा कार्यालय के दूरभाष नं. 0788-4030972 द्वारा सूचित करते हुए या अलग से पत्र लिखकर अवगत कर सकते हैं। अग्निदूत मासिक पत्रिका के सम्बन्ध में कोई भी शिकायत हो तो कृपया श्रीनारायण कौशिक को चलभाष नं. 9770368613 में सम्पर्क कर सकते हैं।**

- दीनानाथ वर्मा, मंत्री मो. 9826363578

कार्यालय पता : 'अग्निदूत', दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.) 491001, फोन : 0788-4030972

दिनांक 15 से 21 फरवरी 2020 तक राजिम में माघी पुन्नी मेला के अवसर पर सम्पन्न ऋषिबोधोत्सव, विश्व कल्याण महायज्ञ एवं वेदप्रचार कार्यक्रम की झलकियाँ

CHH-HIN/2006/17407 मार्च 2020 डाक पंजी. छ.ग./दुर्ग संभाग/99/2018-20
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लायसेंस नं. : TECH/170/CORR/CH-4/2017-18-19

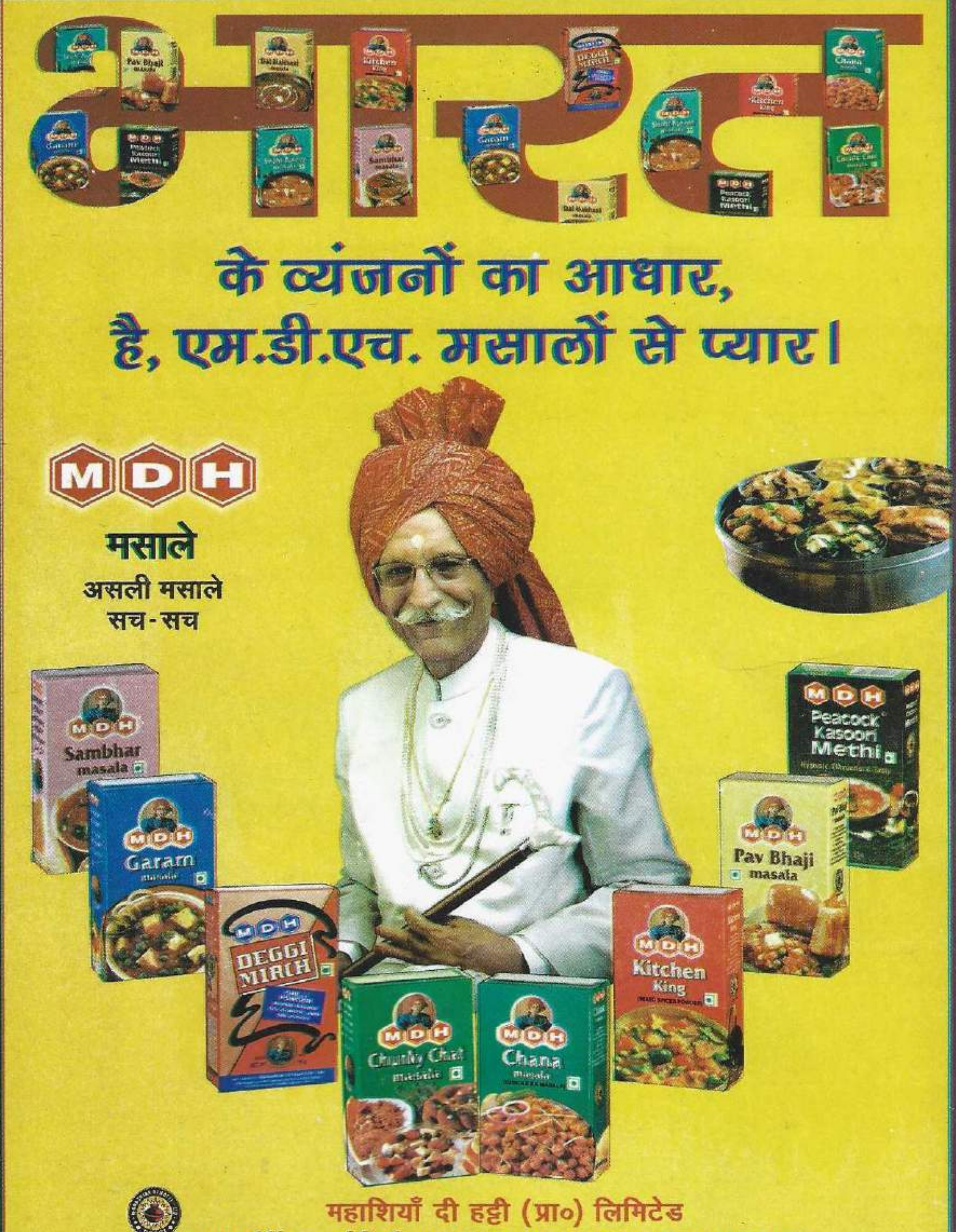

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्य नगर, दुर्ग के वैदिक मुद्रणालय से छपवाकर प्रकाशित किया गया।
प्रेषक : 'अभिमत', हिन्दी मासिक पत्रिका, कार्यालय-छ.ग. प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्य नगर, दुर्ग (छ.ग.) ४९१००१